

प्रथम पटलः

सपर्या-विधिः

कैलाश-शिखरासीनं देवदेवं जगदगुरुं^१ । उवाच पार्वती देवी^२
भैरवं परमेश्वरं ।

श्री पार्वत्युवाच^३—देवदेव महादेव सृष्टि-स्थित्यत्त-कारक^४ ।
कि तद्ब्रह्मयं धाम श्रोतुमिच्छामि तत्वतः । कालिकाया महाविद्यां^५
समत-भेद-संयुतां । सपर्या-भेद-सहितां चतुर्वर्ग-फलप्रदां ।
श्री भैरव उवाच—महाविद्यां महामायां महायोगीश्वरों^६ परां ।
सर्वविद्या^७ महाराज्ञीं सर्वसारस्वत-प्रदां^८ । कामत्रयं वह्निसंस्थं^९ रतिविन्दु-

प्रथम पटल का सारांश

पहले पटल में भगवती दक्षिणा काली के बाइस अक्षर के
मन्त्र की पूजा बताई है, जो पशु और वीर दोनों भावों से हो
सकती है । यथा—

कैलाश शिखर पर विराजमान महादेव से पार्वती ने पूछा—
हे महादेव ! चतुर्वर्ग की फलदायिका ब्रह्म-स्वरूपा कालिका देवी
की महाविद्या (अर्थात् महामन्त्र), उनके मन्त्र-भेद और उनकी
विविध प्रकार की पूजा के सम्बन्ध में मैं सुनना चाहती हूँ ।

महादेव ने कहा—महामाया महायोगीश्वरी परब्रह्मस्वरूपा वह
महाविद्या सब विद्याओं की महाराज्ञी है और सब विद्याओं की

पाठभेद—* १ जगत्पति, २ पप्रच्छ परया भक्त्या, ३ भैरव्युवाच, ४ सृष्टि-स्थिति-लयात्मक सृष्टि-स्थिति-प्रलयकारक, ५ महादेव्याः पूजां चैव विशेषतः, ६ योगेश्वरीं, ७ सर्वविद्यां, ८ सर्वशर्वर्यफल-प्रदां, ९ वर्गद्वय-वह्नि-संयुक्तं ।

सपर्या-विधिः

७

भूषितिं^१ । कूर्चयुग्मं तथा लज्जा-युग्मं तदनन्तरं । दक्षिणे कालिके वेति
पूर्व-वीजानि चोद्धरेत् । अते बहिवधूं दद्याद् विद्या-राज्ञी प्रकीर्तिता ।
नात्र सिद्धुचाच्यपेक्षास्ति न वा मित्रारिलक्षणं^२ । न वा प्रयास-
बाहुल्यं^३ न काय-क्लेश-सम्भवः । यस्याः स्मरण-मात्रेण जीवन्मुक्तो
भवेतः^४ ।

देनेवाली है । क्रमपूर्वक तीन ककारों में रेफ, दीर्घ ईकार और
विन्दु का योग करने से तीन वीज होते हैं । उसके बाद दो कूर्च-
वीज (हूँ), उनके बाद दो लज्जावीज (हीं), उनके बाद 'दक्षिणे
कालिके' ये दो पद, इनके बाद क्रमपूर्वक पूर्वोक्त सातों वीज, उनके
बाद अन्त में 'स्वाहा' का योग करने से दक्षिणा काली का बाइस
अक्षर का मन्त्र होता है । यथा—

क्रींक्रींक्रीं हूँ हूँ हींहीं दक्षिणे का लिके क्रींक्रींक्रीं
हूँ हूँ हींहीं स्वाहा ।

इस मन्त्र के सम्बन्ध में सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, आदि आदि
चक्रों के विचार करने की आवश्यकता नहीं है और न ही इसकी
उपासना में युगभेद के अनुसार चतुर्वर्ण जपादि जैसे अतिरिक्त
परिश्रम अथवा योगादि का आश्रय लेकर शरीर को कष्ट देने
की आवश्यकता होती है । इस मन्त्र का केवल स्मरण भर करने-
जपनन मात्र से मनुष्य जीवन्मुक्त हो सकता है ।

पाठ-भेद—१ समन्वितं, २ नात्र चिन्ता-विशुद्धिस्तु नारि-मित्रादि-लक्षणं;
नात्र चिन्ता-विशुद्धिर्वा नारि-मित्रादि-चिन्तनं, ३ न वित्त-व्यय-बाहुल्यं, ४
यस्याः स्मरण-मात्रेण सिद्धयोग्यता भवन्ति हि ।



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]

मैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्त उष्णिक् छन्द उदाहृतं^१ । देवता कालिका
प्रोक्ता^२ लज्जावीजं तु बीजकं । * शक्तिस्तु कूर्चबीजं स्यादनिरुद्ध-सस्त्रं
स्वती । कवित्वार्थे नियोगः^३ स्यादेवं ऋष्यादिकल्पना ।

अङ्गन्यास-करन्यासौ यथावदभिधीयते । षड्दीर्घभाजा बीजेन प्रणवादेन
कल्पयेत् । हृदयाय नमः प्रोक्तं शिरसे वह्निवल्लभा । शिवायै वषडित्युक्तं
कवचाय हुमीरितं । नेत्रत्रयाय वौषट् स्यादस्त्राय फडिति क्रमः^४ । एवं
यथाविधिं कृत्वा वर्णन्यासं समाचरेत् । वर्णन्यासं प्रवक्ष्यामि येन देवीमयो
भवेत् ।

अ आ इ ई उ ऊ ऊ ऊ लृ वै हृदयं स्पृशेत्^५ । ए ऐ ओ औ
ततोऽप्य अः क ख ग घ पुनस्ततः । उक्त्वा च दक्षिणं भुजं स्पृशेत् साधक-
सत्तमः । ड च छ ज समुच्चार्यं भ ज ट ठ ड ढ तथा । इति वामभुजे
न्यस्य ए त थ द पुनः स्परेत् । व न प फ ब भ इति दक्षिण-जंघके
न्यसेत् । म य र ल व श ष स ह ल ख वामजंघके^६ । इति वर्णनि
प्रविन्यस्य मूलविद्या समुच्चरन्^७ । सप्तधा व्यापकं कुर्याद् येन देवीमयो
भवेत् । व्यापकत्वेन संन्यस्य ततो ध्यायेत् परां शिवां ।

इस मन्त्र के ऋषि मैरव (महाकाल), छन्द उष्णिक्, देवता
दक्षिण कालिका, बीज लज्जावीज (हों), शक्ति कूर्चबीज (हैं),
विद्या अनिरुद्ध सरस्वती (अर्थात् इसकी उपासना से अत्यधिक
वाक्शक्ति प्राप्त होती है) और विनियोग कवित्वशक्ति के प्राप्त्यर्थ
होता है ।*

'उँ क्रां हृदयाय नमः; उँ क्रीं शिरसे स्वाहा' इत्यादि सेरूप-
अङ्गन्यास और करन्यास करे । फिर वर्णन्यास और व्यापक

पाठमेद—१ छन्दो वरानने, २ देवी, ३ कवित्वे विनियोगः, ४ च
अस्त्राय फट् प्रकीर्तिं, ५ यथाविधि, ६ हृदये न्यसेत्, ७ इति वामके, ८ इति

व्याप्त्या प्रविन्यस्य मूलविद्या समुच्चरेत् ।

अधिकपाठः—* कीलकं चाद्य-बीजं स्याज्ज्वतुर्वर्ग-फल-प्रदं ।

पीठन्यासं ततः कुर्याद् येन देवीमयो भवेत् । हृत्सरोजे सुधासिन्धु-मध्ये
द्वीपं सुवर्णं । परितः पारिजातांश्च मध्ये कल्पतरुं ततः । तन्मूले हेम-
निर्मीरणं द्वाश्रवुष्ट्य-भूषितं । मराडपं मन्दवातेन पराक्रान्तं सुधूषितं । मन्त्र-
तन्त्र प्रतिष्ठाप्य^१ तत्र पूजां समाचरेत् । श्मशानं तत्र सम्पूज्य तत्र कल्पद्रुमं
पजेत् । तन्मूले मणिपीठश्च नानामणि-विभूषितं । नानालङ्घार-भूषाद्वं
मुनिदेवैश्च भूषितं । शिवामिर्बहु-मांसास्थि-मोदमानाभिरन्ततः । चतुर्दिक्षु शव-
मुण्डाश्चित्ता झारास्थि-भूषिताः । इच्छा ज्ञाना क्रिया चैव कामिनी काम-
दायिनी । रत्ती रत्तिप्रिया नन्दा मध्ये चैव मनोन्मनी । हृसौः सदाशिवेत्य-
त्वा महाप्रेरेति तत्परं । पद्मासनाय हृदयं पीठन्यास उदाहृतः । एवं देह-
मध्ये पीठे चिन्त्येदिष्ट-देवतां । ध्यानमस्तःः प्रवक्ष्यामि स्मरणाच्छिवतां
प्रजेत् ।

न्यास करके पीठन्यास करे । हृदय कमल में सुधासागर, सागर
के मध्य में रत्नद्वीप, द्वीप-मध्य में चारों ओर पारिजात वृक्ष, वृक्षों
के मध्य में कल्पवृक्ष, उसके मूल स्थान में सुवर्ण के बने चार
द्वारों से युक्त चिन्तामणि गृह, जिससे सुगन्ध फैल रही है । इसके
बाद श्मशान, उसके मध्य में कल्पवृक्ष, उसके मूलस्थान में विविध
प्रकार की मणियों से शोभित मणिमय पीठ, चारों ओर श्मशान
के शब-मांसादि के भज्ञण से तृप्त हुई शिवायै धूम रही हैं; शब
मुण्ड, चिता के अङ्गार, हड्डियां आदि बिखरी हुई हैं । उसी
मणिपीठ की आठ दिशाओं में १ इच्छा, २ ज्ञान, ३ क्रिया,
४ कामिनी, ५ कामदायिनी, ६ रति, ७ रतिप्रिया, ८ नन्दा—ये
आठ शक्तियाँ और इनके मध्य में मनोन्मनी शक्ति विराजमान
है । इन नौ शक्तियों के मस्तक पर महाप्रेतरूपी सदाशिव सो
रहे हैं । इस प्रकार पीठ की कल्पना कर शवरूपी सदाशिव के
ऊपर देवी का ध्यान करे ।

पाठ-भेद—१ मन्त्रस्त्र

एवं सञ्चितयेत् कालीं सर्वकामार्थसिद्धये^१ । अर्याचन-विधि^२ वक्ष्ये देव्या
सर्व-समृद्धिदं । * येनानुष्ठित-मात्रेण स्वयं भैरव-रूपवाव । येनानुष्ठित-
मात्रेण भवावौ न निमज्जति । अनेकहेमरत्नादि-माणिक्य-वर-सिद्धिदं ।
इन्द्रादि-सुर-वृद्धानां सावनैक-कलप्रदं । विपक्ष-कुल-संहार-कारणं पौरुष-
दं^३ । शान्तिक^४ पौष्टिकश्चैव वशीकरणमुत्तमं । मारणोच्छेद-जनकमा-
कृष्टि-करमुत्तमं^५ । समस्त-शोक-शमनमानन्दव्यौ निमज्जनं^६ । चतुःसमुद्र-
पर्यन्त-मेदिनी-साधनोत्तमं^७ । खी-रत्न-कुल-सन्दायि पुत्र-पौत्र-विवर्धनं ।

मान है; मुख पर हास्य का कुछ भाव है । दो मृत नर-शिशुओं से
कान के भूषण हैं । चार हाथों में से—बाईं ओर नीचे के हाथ
में तुरन्त का कटा हुआ नरमुण्ड और ऊपर के हाथ में नज्जु
खडग है; हाईं ओर ऊपर के हाथ में अभयमुद्रा और नीचे के
हाथ में वरद मुद्रा है । गले में चरणकमलों तक लटकी हुई मुण्ड-
माला है । इस माला में पचास नरमुण्ड हैं, जो एक दूसरे से केश
द्वारा गुँथे हुए हैं । दोनों स्तन उन्नत और स्थूल हैं । कमर में वस्त्र
नहीं है, किन्तु कटे हुए नर-कर्नसमूह द्वारा बनी हुई करधनी
पहने हुए हैं । देवी का शरीर वर्ण करने को उद्यत काले बादलों
के समान श्यामरण का है और मुण्डमाला से निकलते हुए रक्त
से रँगा हुआ है । वे शिव को नीचे लिटाकर उनके ऊपर नृत्य कर-

पाठमेद— ? श्मशानालयवासिनीं; एवं सञ्चित्य तां कालीं
प्राणन्यासं समाचरेत्, २ अनुष्ठान-विधि, ३ शरण-प्रदं, ४ शान्तिदं, ५
मारणोच्छेद-जनकं तथा- कर्पणमुत्तमं; मारणोच्छेदन-करं, ६ नन्दावि-
विष्वदयं; नन्दादि-विभूतिदं; नन्दाविदि-विभूतिदं, ७ पर्यन्तां धरित्रीं साधयेत्था,
अधिक श्लोक— *मानसैर्वचयित्वा तु माक्षात् सिद्धीवरो भवेत् ।
गन्ध-पीठाचंनं वक्ष्ये देव राः सर्व-समृद्धिदं ।

करालवदनां घोरां मुक्तकेशों चतुर्भुजां । कालिकां दक्षिणां दिव्यां
मुण्डमाला-विभूषितां । सद्य श्लिष्टशिर-खडग-वामाधोधर्व-कराम्बुजां । अभयं
वरदश्चैव दक्षिणांच्चविवि^१-पणिकां । महामेव-प्रभां व्या मां तथा चैव दिग-
म्बरीं^२ । कर्णातवसक्त-मुण्डाली-गलद्रुधिर-चर्चितां । करणावितंस-तानीत-
शवयुग्म-भयानका । घोरदंश्रों करालास्यां पोनोक्षत-प्योवरां । शवानां कर-
सङ्घातैः कृतकाद्वां हसन्मुखों । सृक्ष-द्वय-गलद्रक्त-शारा-विष्फुरितानां ।
वोरावां महारौद्रों^३ श्मशानालयवासिनीं । बालार्क-मण्डलाकार-लोचन
भिर्वाराभिश्चतुर्दश्यु समन्वितां । मुख-प्रसन्न-वदनां स्मेरानन-सरोरुहां ।
योगिनी-चक्र-सहितां कालिकां भावयेत् सदा ।

भीषण श्मशान-भूमि, चारों ओर शिवायें भयङ्कर स्वर में
चिल्ला रही हैं । इस प्रकार के श्मशान के मध्य में शवसूप महा-
देव के हृदय के ऊपर देवी स्थित हैं । देवी का दाहना पैर शव
के हृदय पर और वायाँ पैर शव की दोनों ज़ज्ज्वालों पर रखा हुआ
है । विश्वरे हुये लम्बे-लम्बे केश देवी के दाहने अङ्गों को ढँके हुए
हैं । तीन नेत्र नवोदित सूर्य के समान रक्तवर्ण के हैं । मुख भक्तों
के लिए प्रकुलित कमल के समान आनन्ददायक और विकसित
है परन्तु अभक्तों के लिए भयदायक, अनेक दाँत एक पर एक जमे
हुए, सामने का दाँत उन्नत, जिह्वा लपलपाती हुई, ओठ के दोनों
किनारों से पीने से बची हुई रक्तधारा के बहने से मुख शोभाय-
पाठमेद— १ दक्षिणाधोधर्व, २ दिगन्दरां, ३ स्मितमुखीं, ४ मण्डला-
कारां त्रिनेत्रामुक्तता-स्तनीं, ५ वै साद्वं मुपविष्ट; साद्वं तामुपविष्टां; च
समुपविष्टां, ६ समरातुरां ।

आदौ यन्त्रं प्रवश्यामि यज्ञात्वाऽमरतां व्रजेत् । आदौ त्रिकोणं विन्यस्त् त्रिकोणं तद्वह्न्यसेत् । ततो वै विलिखेन्मन्त्रो त्रिकोण-त्रयमुत्तमं । वृत्तं विलिख्य विधिवलिखेत् पद्मं सुलक्षणं । ततो वृत्तं विलिख्यैव लिखेद् भूपुरमेककं । चतुरस्सं चतुर्द्वारमेवं मण्डलमालिखेत् ।

पीठपूजां ततः कृत्वा स्ववामेऽर्थं न्यसेत् प्रिये^१ । मूलविद्यां षड्ङ्गेन मूलमन्त्रेण चाचयेत् । ततो हृदय-पञ्चान्तः स्फुरन्तीं परमां कलां । यन्त्रमध्ये समावाह्य न्यास-जालं^२ प्रविन्यसेत् । ततो ध्यात्वा महादेवीमुपचारान् प्रकल्पयेत्^३ । नमस्कृत्य महादेवीं तत आवरणं यजेत् ।

कालीं कपालिनीं कुल्लां कुरुकुल्लां विरोधिनीं । विप्रचितां तु सम्पूज्य बहिः षट्कोणके ततः^४ । उग्रामुग्रप्रभां दीपां तथा मध्य-त्रिकोणके । नीलां

रही हैं । इससे प्रतीत होता है कि वे महाकाल के साथ विपरीत रति में आसक्त हैं । देवी भयङ्कर शब्द कर रही हैं अर्थात् अभक्तों के लिए उनका शब्द भयकारी है । उनका स्वरूप अत्यन्त उम्र है और स्थूल इन्द्रियों के परे है । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इस चतुर्वर्ग की सिद्धि के लिए दक्षिणा काली का ध्यान इसी प्रकार करे ।

अब देवी की पूजाविधि कही जाती है । इनकी पूजा करने से मोक्ष के इच्छुक व्यक्ति मुक्ति पाते हैं और भोग के इच्छुक लोगों को सभी कामनायें पूरी होती हैं ।

सबसे पहले पूजा के आधार 'यन्त्र' का कथन किया जाता है । पहले एक अधोमुख त्रिकोण बनावे । इस त्रिकोण को मध्य में रखते हुए इसके बाहर एक वृत्त, वृत्त के बाहर अष्टदल कमल, कमल के बाहर एक और वृत्त, वृत्त के बाहर चार द्वारों से युक्त चतुरस्स का भूपुर बनावे । (प्रथम त्रिकोण के ठीक मध्य में एक विन्दु और 'क्रीको' इन दो बोजां को लिखे—ऐसा क्रम है, यद्यपि कालीतन्त्र में उल्लेख नहीं है ।) यही दक्षिणा काली का पूजायन्त्र है ।

पाठ-भेद—१ उर्ध्वं च विन्यसेत्, २ न्यासमेवं, ३ मुपचारैः प्रकल्पयेत्,

४ वृद्धः

बनां बलाकां तथैवान्य त्रिकोणके^१ । मात्रां मुद्रां मिताश्वैव तथैवान्य-त्रिकोणके^२ । सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमाला-विभूषिताः^३ । तर्जनीं वाम-हस्तेन घारयन्त्यः शुचि-स्मिताः^४ । ततो वै मातरः पूज्या ब्राह्मी नारायणीं तथा * । माहेश्वरी च चामुरङ्गा कौमारी चापराजिता । बाराही च तथा पूज्या नारसिंहो तथैव च । सर्वसामपि देवोनां वलिः पूज्या तथैव च^५ । अनुलेपनकं गन्धो धूपदीपौ तथैव च^६ । त्रिस्त्रिः^७ पूजां प्रकर्तव्या सर्वसामपि साधकैः । गुरुर्पर्क्ति षड्ङ्गश्च दिक्पालांश्च ततो-इच्छयेत् ।

एवं पूजां पुरा कृत्वा मूलेनैव यथाविधि । नैवेद्यादीनं^८ यथाशक्त्या दद्याद् देव्ये पुनः पुनः । ततो वै दशावारांस्तु^९ दीपं दद्यात्^{१०}

त्रिकोण और बनावे । इस प्रकार पांच त्रिकोण हुये । ये सभी समबाहु त्रिभुज होंगे । इन त्रिकोणों को मध्य में रखते हुए इनके बाहर एक वृत्त, वृत्त के बाहर अष्टदल कमल, कमल के बाहर एक और वृत्त, वृत्त के बाहर चार द्वारों से युक्त चतुरस्स का भूपुर बनावे । (प्रथम त्रिकोण के ठीक मध्य में एक विन्दु और 'क्रीको' इन दो बोजां को लिखे—ऐसा क्रम है, यद्यपि कालीतन्त्र में उल्लेख नहीं है ।) यही दक्षिणा काली का पूजायन्त्र है ।

इसके बाद पीठपूजा कर अपने बाईं ओर अर्ध्य-स्थापन करे । तब षड्ङ्गपूजा कर पुनः ध्यान करे । फिर हृदयकमल में

पाठ-भेद—१ तथापर-त्रिकोणके; तथैवापरके त्रिके, २ तथैवान्य-त्रिकोणके; न्यसेच्च अन्य-त्रिकोणके, ३ विभूषणः, ४ च सस्मिताः, ५ वै देयो बलिः पूजनमेव च, ६ गन्धं धूप-दीपौ क्रमात् तथा; गन्धं धूप-दीपौ च पानकं, ७ त्रिभिः, ८ नैवेद्यान्तं; नैवेद्यादि, ९ दशा-वारं तु, १० दत्वा च ।

अन्य इलोक—६ ततो वै मातरः पूज्याः पद्मेष्वर्ष्ट-दलेषु च । तत्रादौ पूज्येद् ब्राह्मीं ततो नारायणीं तथा ।

साधकः । पुष्पादिकं पुनर्द्वयान्मूलेनैव यथाविवि ॥ ततः सावहितो मन्त्री
गुह्यं नत्वा शिरः स्थितं । देवी ध्यात्वा चाष्टोत्तर-सहस्रं^१ प्रजपेन्मनुं ।
तेजोमयं जपफलं^२ देव्या हस्ते समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वमिति
मन्त्रेण मन्त्रवित् । ततः शिरसि वै^३ पुष्पं दत्त्वाष्टाङ्गं प्रणम्य च ।

प्रद शमान देवी का यन्त्र के मध्य में आवाहन कर उपलब्ध
उपचारां से पूजन करे ।

तदनन्तर देवो वो नमस्कार कर आवरण-पूजा करे ।
ये—पञ्च त्रिवोणों के समस्त पन्द्रह कोणों में
वासावर्त से क्रमशः १ कली, २ कपालिनी, ३ कुल्ला, ४ कुरु
कुल्ला, ५ विरोधिनी, ६ विग्रहिता, ७ उग्रा, ८ उम्प्रभा, ९ दीपा,
१० नीला, ११ घना, १२ बलाका, १३ मात्रा, १४ मुद्रा, १५
मिता—इन १५ देवताओं की पूजा करे । ये सभी श्यामवर्ण की
हैं । इनके दाहने हाथ में तलवार, बाएँ हाथ में तर्जनी अर्थात्
ताड़न-यष्टि है, गले में मुण्डमाला और मुख पर मुस्कान है ।
इसके बाद १ ब्राह्मी, २ इन्द्राणी, ३ माहेश्वरी, ४ चामुण्डा,
५ कौमारी, ६ अपराजिता, ७ वाराही, ८ नारसिंही—इन आठ
मातृकाओं की पूजा करे प्रत्येक देवता को अनुलेपन, ९ गन्ध,
धूप, दीप तीन-तीन बार प्रदान करे । तदनन्तर गुरुपंचि, षष्ठ्य
और इन्द्रादि दश दिक्पालों की क्रमशः पूजा करे

आवरण-देवताओं की पूजा कर चुकने पर मूलदेवता को
पुनः यथार्शक्ति नैवेद्यादि प्रदान करे । फिर गुरुदेव को प्रणाम
कर मूलदेवता का ध्यान करता हुआ मूलमन्त्र का एक हजार पाठ
बार जप करे । इसके बाद ‘गुह्यातिगुह्य गोप्त्री’ इत्यादि मन्त्र के
द्वारा तेजोमय जपफल देवी के बाएँ हाथ में अर्पित करे । फिर

पाठ-मेद—१ शतं च, २ जप-जलं, जलं देव्या वास, ३ ततो वै
शिरसे ।

विसृज्य परया भक्त्या संहारेणैव भक्तिः^१ । उद्वास्य हृदये देवीं तन्मयो
भवति ध्रुवं । पुरश्च रण-कालेऽपि पूजा चैषा प्रकीर्तिः ।

॥ श्री कालीतन्त्रे सपर्यान्विधिः^२ नाम प्रथम पटलः ॥

मस्तक पर पुष्प चढ़ाकर अष्टाङ्ग प्रणाम कर संहार मुद्रा द्वारा
देवी का विसर्जन करते हुये उन्हें अपने हृदय में ले आवे ।
पुरश्चरण-काल में भी इसी पूजा को करे ।

पाठ-मेद—१ सन्निधापन-मुद्रया, २ सपर्यान्विधिः, सपर्यान्विधिः



मन्त्र-पुरस्कारं निन्दां चैव विवर्जयेत् । ततः सिद्ध-मनु-मन्त्री प्रथागार्हो न
चान्यथा । जीव-हीनो यथा देही सर्व-कर्मसु न क्षमः । पुरश्चरण-हीनोऽपि
तथा मन्त्रः प्रकीर्तिः । तस्मादादौ पुरश्चर्यां कृत्वा सावक-सत्तमः । प्रयोगं
च ततः कुर्यात् सर्व-साधक-दुर्लभम् ॥

॥ श्री कालीतन्त्रे पुरश्चरण-विधिः नाम द्वितीय पटलः ॥

द्वितीय पटलः

पुरश्चरण-विधिः

भैरव उवाच—साधनं सिद्धमन्त्रस्य वक्ष्यामि परमाङ्गुतं । भास्य-
हीनोऽपि मूर्खोऽपि यद्बोधादमरो भवेत् । साधयेत् सकलात्^१ कामाच-
सर्व-सिद्धिश्वरो भवेत् । आदौ पुरस्किया कुर्यान्नियमेन यथाविधिः^२ ।
लक्षणेकं जपेद् विद्यां^३ हविष्याशी दिवा शुचिः । रात्रौ ताम्बूल-पूरास्यः^४
शश्यायां लक्षणतः ।

नानाचारो न कर्तव्यो न चारणमितस्ततः^५ । भूर्तिंहसा न कर्तव्या
पशु-हिंसा विशेषतः । वलिदानं विना देवगा हिंसां सर्वत्र वर्जयेत् । अन्य-

द्वितीय पटल का सारांश

द्वितीय पटल में उल्लिखित मन्त्र के पुरश्चरण की आवश्यकता
बताइ है । जीवहीन शरीर के समान ही पुरश्चरणहीन मन्त्र भी
किसी कार्य-साधन में समर्थ नहीं होता । पुरश्चरण के द्वारा
मूर्ख व्यक्ति की भी सभी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं । उक्त मन्त्र
का एक लाख जप करने से पुश्चरण होता है । पशुभाव में
हविष्याशी और संयत रहकर प्रातःकाल से मध्या के मध्याह्न तक
जप करे । वीरभाव में पञ्चमकार-न्युक्त होकर रात्रि में जप करे ।
विभिन्न आचारों में परायण न होना चाहिए, अर्थात् पशुभाव
का साधक पश्चाचार से ही पुरश्चरण करें; वीराचार का
अवलम्बन न करें । इसी प्रकार वीरभाव का साधक वीराचार

पाठ-भेद—१ सिद्धि-सकलात् साक्षात् सिद्धीश्वरो, २ समाहितः,
३ जपेमन्त्री, ४ पूरणस्यः, ५ न चाचरणमित्यते, न चाचारमितस्ततः ।

में ही पुरश्चरण करे । पुरश्चरण-काल में देवीपूजा-गत बलिदान
के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की प्राणिहिंसा न करे और न
ही किसी की निन्दा करे । इस प्रकार के पुरश्चरण-द्वारा मन्त्र-
सिद्धि प्राप्त कर उसके बाद शान्तिक, पौष्टिक, वशीकरण,
उच्चाटन आदि प्रयोग करे । पुरश्चरण द्वारा मन्त्रसिद्धि लाभ
किए बिना साधक मन्त्र-प्रयोग का अविकारी नहीं होता ।

पाठ-भेद— ३ प्रयोगं च सदा कुर्यात् सर्व-विधि-विधानतः ॥



ततदान्जोति निश्चितं । देव-वन्मानवो भूत्वा भुनक्ति बहुलं सुखं ।

तर्पणस्य विधिं वश्ये येन कार्याणि साक्षयेत् । तपेच्च पयोभिश्च रक्त-
धारायुतैस्तथा । मज्जाभिश्च^१ तथा तद्वत् स्वकीयेन परेण^२ च । आक-
र्षितायाः कुल-प्रकालनेन च । मेष-माहिष-रक्तेन नर-रक्तेन चैव हि । मूष-
मार्जार-रक्तेन तपेद्व देवतां परां ।

एवं तर्पण-मात्रेण साक्षात् सिद्धीश्वरो भवेत् । कविता जायते तस्य
द्राक्षा-रस-परम्परा । वृहस्पति-समो भूत्वा देव-वद् भूवि मोदते । न तस्य
पाप-पुरण्यानि जीवन्मुक्तो भवेद् ध्रुवं ।

॥ श्री काली-तन्त्रे नैमित्तिक-विधिर्नाम तृतीय पटलः ॥

भोजन की चर्चा नहीं की गई है । होम और तर्पण की जो विधि
दी है, वह वीरभाव की है; पशुभाव की विधि नहीं दी है । लता-
पुष्प से युक्त विल्वपत्र घृत, चावल, मांस, रुधिर, कृष्णपुष्प आदि
से शमशान में होम करना होता है । इस प्रकार के होम से सब
प्रकार की कामनाएँ पूर्ण होती हैं, अणिमादि अष्टसिद्धियाँ प्राप्त
होती हैं; पाण्डित्य और वाक्सिद्धि मिलती है; रक्तधारायुक्त
जल, स्वकीय अथवा परकीय मज्जा, शक्ति-कुल-प्रकालित जल,
मेष-महिष-नर-मूषक-मार्जार आदि का रक्त—इनमें से किसी
द्रव्य द्वारा तर्पण करने से भी पूर्वोक्त कल होता है । इस प्रकार
की क्रिया से पाप-पुण्य का क्षय होकर साधक को जीवन्मुक्ति
मिलती है ।

पाठमेद—१ रेतोभिश्च, २ कचेन, करेण

१ विधि-वदाहृय, २ जायतेऽचिरात्; दक्षिणा पूजिता भवेत् ।
३ दुर्लभं; होमकं; होमतः; ४ सूको; ५ प्रयत्नतः;
६ प्रपूजयेत्, ७ सिद्ध-मानसः; ८ तिलं, ९ भोज्यं च, १० साज्यं, ११ कामं

नैमित्तिक-विधिः

भैरव उवाच—ततो होम-विधिं वश्ये सर्व-सिद्धि-प्रदायकं । लता-
पुष्पान्वितं कृत्वा परानां शतकं सुधीः । तानि सम्मन्त्र्य विधिवदसङ्कृतं
साधकोत्तमः । ततो वै होमयेत् तानि संस्कृतेऽग्नौ यथाविधिः । युगानामयुतं
तेन पूजनं जायते शिवे^१ । अनेन क्रम-योगेन यश्चरेद् भूवि साधकः^२ । न
तस्य दुर्लभं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते । धीरो^३ भवति वाम्पी च सर्व-
सिद्धिमुपालभेत् ।

हुनेदाज्ज्ञेन भवतेन मांसेन रुक्षिरेण च । कृष्ण-पुष्पेण साज्येन सरक्तेन
विशेषतः । आमिषादिभिरप्येवं शमशाने जुहुयात् सुधीः । महाकालं हुनेद् यत्नात्
पश्चाद् देवों विशेषतः^४ । त्रिधा विभज्य विद्यां वै साधकः शुद्ध-मानसः^५ ।
मांसं रक्तं त्वचं^६ केशं नखं भक्तव्य^७ पायसम् । आज्यं^८ चैव विशेषणे
जुहुयात् सर्व-सिद्धये ।

एवं कृते तु सर्वत्र लभते सिद्धिमुत्तमां । यद् यत् कामयते कामी^{१०}

तृतीय पटल का सारांश

१ जप, २ होम, ३ तर्पण, ४ अभिषेक और ५ ब्राह्मण-भोजन
—ये पाँच अङ्ग पुरश्चरण के होते हैं । इस पटल में जप, होम
और तर्पण की विधि कही गई है । किन्तु अभिषेक और ब्राह्मण-

पाठमेद—१ विधि-वदाहृय, २ जायतेऽचिरात्; दक्षिणा पूजिता भवेत्;
कालिका पूजिता भवेत्, ३ दुर्लभं; होमकं; होमतः; ४ सूको, ५ प्रयत्नतः;
प्रपूजयेत्, ६ सिद्ध-मानसः; ७ तिलं, ८ भोज्यं च, ९ साज्यं, १० कामं

चतुर्थ पटलः

कामना-विधिः

भैरव उवाच—अथ काम्य-विधिं वक्ष्ये येन सर्वत्र सर्वगः । साधकः साधयेत् सिद्धिं^१ देवानामपि दुर्लभां^२ । कुलागारं पुष्पिताया दृष्ट्वा यो जपते नरः । अयुतैक-प्रमाणेन साधकः स्थिर-मानसः । केवलं गुप्तभावेन स तु विद्या-निर्विभवेत् । संस्कृताः प्राकृताः शब्दा लौकिका वैदिकाश्च ये^३ । वशमायान्ति ते सर्वे साधकस्य च नान्यथा । अथवा मुक्तकेशश्च हविष्याशी मुसंयतः^४ । प्रजपेदयुतं प्राज्ञ एतदेव^५ फलं लभेत् ।

चतुर्थ पटल का सारांश

इस पटल में बीरभाव-सम्मत अनेक प्रकार की काम्य-विधियाँ बताई हैं । ये विधियाँ बड़ी रहस्यमयी हैं । इन्हें गुरुदेव से समझना चाहिए ।

स्त्रियों को मारना या उनकी निन्दा करना मना है । उनके साथ कुटिल या अप्रिय व्यवहार नहीं करना चाहिए । स्त्री को ही देवता, स्त्री को ही प्राण और स्त्री को ही भूषण समझना चाहिए । स्त्री द्वारा लाये गये पुष्प, जल, भोज्य पदार्थों आदि से ही देवता की पूजा करे ।

पाठभेद—१ सर्वं, २ दुर्लभं, ३ वैदिका अपि; वैदिकास्तथा, ४ हविष्यं भक्षयेन्नरः, ५ प्रजप्य चायुतं प्राज्ञस्तदेव हि

नग्नां पर-लतां पश्यन्नयुतं यस्तु साधकः । प्रजपेत् स भवेत् सद्यो^६ विद्याया वल्लभः स्वयं । तस्य दर्शन-मात्रेण वादिनः कुण्डतां गताः^१ । गदा-पद्म-मधी वाणी तस्य वक्त्रात् प्रवर्तते^२ । तत्पदे^३ सुधियः सर्वे^४ प्रणमन्ति मुदान्विताः । तस्य वाक्यं^५-परिच्याज्जडा भवन्ति वास्मिनः^६ । अथवा मुक्त-केशश्च हविष्यं भक्षयेन्नरः । प्रजपेदयुतं तस्य एष प्रतिनिधिः स्मृतः ।

धन-कामस्तु यो विद्वान् महद्देवर्य-कामुकः । वृहस्पति-समो यस्तु भवितुः कामयेन्नरः^६ । अष्टोत्तर-शतं जप्त्वा कुलमामंत्र्य मन्त्र-वित्^७ । मैथुनं यः प्रयात्येव^८ स तु सर्व-फलं लभेत् । लता-रतेषु जप्तव्यं महा-पातक-मुक्तये । लतां यदि न लभ्येत तदा मज्जां^९ प्रयत्नतः । समुत्सार्य जपेन्मन्त्री सर्वं^{१०} कामार्थं-सिद्धये ।

तासां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यमन्त्रियं तथा । सर्वथा च न कर्तव्यमन्यथा सिद्धि-रोध-कृत् । स्त्रियो देवाः स्त्रियः प्राणाः स्त्रिय एव विभूषणं^{११} । स्त्री-सङ्ग्नाना सदा भाव्यमन्यथा स्व-स्त्रियामपि^{१२} । विपरीत-रता सा तु^{१३} भाविता हृदयोपरि । अष्टोत्तर-शतं जप्त्वा नासाध्यं विद्यते कवचित् । तद्वस्तावचितं पुष्पं तद्वस्तावचितं जलं । तद्वस्तावचितं भोज्यं देव-ताम्यो निवेदयेत् ।

पाठभेद—१ निष्प्रभा मताः, २ प्रजायते, ३ तत्राम्ना, ४ काव्य, ५ जड़ी भवति वाल्मीकः, ६ कामयते स्वयं; भूत्वा कवित्वं कारयेत्तथा, ७ यन्तरं, ८ करोत्येषः; प्रयात्येषः, ९ यदि न सङ्गच्छेतदा शुकं; यदि संसर्गस्तदा शुकं, १० धर्मः, ततो जप्यं सर्वं, ११ स्त्रियो देव्यः स्त्रियः पूज्याः एव हि भूषणं, १२ स्व-स्त्रिया अपि, १३ रतासक्ता; मता

महा-चीन-द्रुम-लता-वेष्टिः सावकोत्तमः । रात्रौ यदि जपेन्मन्त्रं^१ सैव
कल्प-लता भवेत् । महा-चीन-द्रुम-लता वेष्टनेन च यस्त्वतः । तस्यापि बोडशांशेन
कलां नार्हन्ति ते शवाः । शवासनाधिक-फलं लतागेह-प्रवेशनं । इमशानालय-
भागत्य मुक्त-केशो दिग्भवरः । जपेद्युत-संख्यं तु सर्वं कामार्थ-सिद्धये ।

महा-चीन-द्रुम-लता-मज्जाभिविल्व-पत्रकं^२ । सहस्रं देवीमध्यर्च्यं इमशाने
सावकोत्तमः । तदा राज्यमानोति^३ यदि सा न पलायते । स्व-गात्र-रुधिरा-
क्तैश्च विल्वपत्रैः सहस्रशः । इमशानेऽभ्यर्च्यं कालीं तु^४ वागीश-समतां
व्रजेत् । अनादिकां तथा^५ दृष्ट्वा लक्षं जपति भूमिपः । निर्मलां^६ च
तथा दृष्ट्वा वश्यार्थमयुतं जपेत् ।

॥ श्री काली-तन्त्रे कामना-विधिः नाम चतुर्थं पटलः ॥

पाठभेद—१ मन्त्री, २ पत्रकैः, ३ तु राज्यमानोति, ४ देवीं च,
५ मूलविद्यां लतां; अनादितां तथा; अनुदितां यथा, ६ विमलां



पञ्चम पटलः

सिद्धविद्या-विधिः

भैरव उवाच—अथातः सम्प्रवश्यामि मन्त्रं कल्पद्रुमं परं । येन जपेन
विधिवत् सिद्धयोऽस्या भवन्ति हि । यस्याः स्मरण-मात्रेण वाचश्चित्रायते^१
रुपाणां । यज्ञाना^२ दमरत्वं च लभेन्मुक्तिं चतुर्विधां । ये जपन्ति परां
देवीं नियमेन तु संस्थिताः^३ । देवाः सर्वे नमस्यन्ति किं पुनर्मनिवादयः ।

बृहस्पति-समो वाग्मी धने धनपतिर्भवेत् । काम-तुल्यश्च नारीणां रिपूराणं
यामनोपमः^४ । तस्य पादाम्बुज-दन्द्वं राजा किरीटं-भूषणं । तस्य भूतिं
चिनोत्यैव कुवेरोपि तिरस्कृतः । य एनां पूजयेद् देवीं नियमे^५ पितृ-कानने ।
तस्य चाज्ञाकराः^६ सर्वे सिद्धयोऽस्यौ भवन्ति हि ।

पञ्चम पटल का सारांश

पहले पटल में दक्षिणा काली का वार्डस अक्षर का जा मन्त्र
बताया गया है, उसी की साधन-विधि चौथे पटल तक कही गई
है । पाँचवें पटल में पन्द्रह और इक्कीस अक्षरों के दो मन्त्रों का
उल्लेख हुआ है । यथा—

पाठभेद—१ मुक्तिस्तु जायते, २ यज्ञा, ३ नियमेन श्वे स्थिताः;
४ तथा देवीं नियमेन नर-स्थिताः; नियमेन नराः स्थिताः,
५ रिपूराणमनलोपमः; रिपूराणं च यमोपमः, ६ मुकुट, ६ तु यजेद्वीं नियमः;
७ विलयेद्वीं नियमः; चिन्तयेन्मन्त्री नियतः, ७ तस्येवाज्ञा-कराः

तस्यैव जननी धन्या पिता तस्य मुरोपमः^१ । सम्प्रदाय-विदां वक्ता
य एनां वेति तत्वतः । अस्या विज्ञान-मात्रेण कुल-कोटीः समुद्भरेत् । नंदन्ति
पितरः सर्वे गाथां गायन्ति ते मुदा^२ । अपि नः स्वकुले कश्चित् कुल-ज्ञानी स
भविष्यति । स धन्यः स च विज्ञानी स कविः स च पंडितः । स कुलीनः
सुकृती स वशी स च साधकः । स ब्राह्मणः स वेदज्ञः सोऽग्निहोत्री स
दीक्षितः^३ । स तीर्थ-सेवी पीठानां स निवासी स सर्वदः ।

स सोम-पायी स ब्रती स यज्वा स च साधकः^४ । स संन्यासी
च योगी च स मुक्तः^५ स च ब्रह्म-वित् । स वैष्णवः स शौचश्च स सौरः
स च गाशपः । स च विज्ञान-वेत्ता च य एनां वेति तत्वतः ।
तस्मात् सर्व-प्रथलेन सर्वावस्थामु सर्वदा । एनां ज्ञात्वा यजेन्ते^६ मन्त्री
मुख-मोक्ष-फल-प्रदां^७ ।

नमः पाशांकुशे द्वे धा फट् स्वाहा कालि कालि कालिके । दीर्घ-तनुच्छदः
काली-मनुः पञ्च-दशाक्षरः । अनया सदृशी विद्या त्रैलोक्ये नापि विद्यते ।

१ नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हं ।
२ छँ हीं हीं हं हं क्रीं क्रीं क्रीं दाद्येण कालिके क्रीं क्रीं हं
हं हीं हीं ।

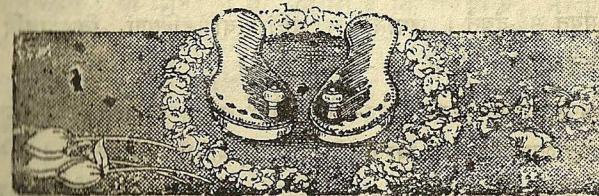
दूसरा मन्त्र 'विद्यारत्न' के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी पूजा-
विधि २२ अक्षर के मन्त्रवत् है ।

पाठ-भेद—१ तातस्तस्य शिवोपमः, २ सर्वदा, ३ सर्व-दीक्षितः; स च
भूमिपः, ४ स ब्रती सोम-पायी; स यज्वा स च दीक्षितः, ५ स सोम-
पायी संन्यासी स योगी, ६ जपेन्, ७ महालयां; महापलं

विद्या-रत्नं प्रवश्यामि श्रुत्वा कण्ठितंस-वत्^१ । मायाद्वयं कूर्च-
युग्ममैन्द्रान्तम् मादन^२-त्रयं । माया-विन्दीश्वर-युतं दक्षिणो कालिके पदं ।
महार-कम-योगेन वीज-सप्तकमुद्भरेत् । एक-विंशत भराव्यस्ताराद्यः^३
कालिका-मनुः । पूर्वोक्त-मन्त्र-वत् कुर्यात् पूजां सर्वां विचक्षणाः ।

॥ श्री काली-तन्त्रे सिद्ध-विद्या नाम पञ्चम पटलः ॥

पाठ-भेद—१ श्रोतुः कण्ठितंसकं, २ मदन, ३ छँः प्रोक्तोऽयं



षष्ठ पटलः

वीर-साधना

भैरव उवाच—शुगु देवि वरारोहे वीर-साधनमुत्तमं । न एां शीघ्र-
फलावाप्यै प्रकारान्तरमुच्यते । चतुष्पथे चतुर्दिक्षु पुरुषं हृदयं स्नेत् । जीवितं
ब्रह्मरन्ध्रे वै दीपात् प्रज्वालयेत्^१ सुधीः । मध्ये तथा खनेदेकं तत्र
मूर्द्धसनं^२ भवेत् । पूर्वोक्ते न च मार्गेण तत्र संस्कारमाचरेत्^३ । महा-
कालादि-देवेभ्यो वलि पूर्वेवदाहरेत् । कल्पोक्त-पूजां संपूज्य जपेत् प्रयत्नं^४
मानसः । दंताक्ष-मालया चैव राज-दंतेन मेरुणा । दिव्यासाः प्रजपे-
न्मन्त्रमयुतं सदैवतं । जपान्ते च बलिं दत्वा दक्षिणां विभवावति ।
सर्व-सिद्धीश्वरो विद्वान् सर्व-देव-नमस्कृतः ।

अथवा विजनेऽरण्ये स्थिर-योगासनो^५ नरः । उदयास्तं दिवा जप्त्वा
सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् । विल्व-वक्षे निज-कोडे शवमारोप्य यत्नतः । नृसिंह-
मुद्रया बीश्य जपेन्मात्रकया नरः । सहवृं तत्र जप्त्वा वै सर्व-सिद्धीश्वरो

षष्ठ पटल का सारांश

इस पटल में अनेक प्रकार के वीर-साधन बताए हैं । पहले
चतुष्पथ साधन का वर्णन है ।

निर्जन वन में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक जप करने
से सब सिद्धियाँ मिलती हैं ।

पाठभेद—१ लयेदिति, लयेद्विशि, २ तथा मुद्रासनं स्तरेत, तत्र शुद्ध-
सनं भवेत्, ३ मारभेत्, ४ नियत, ५ स्थिर शर्यासनो; अस्थि शशासनो

भवेत् । वट-मूले शबं नीत्वा तत्र देवीं प्रपूज्य च । सूप्त्वा^१ तत्र मनुं जप्त्वा
रावै-सिद्धीश्वरो भवेत् । कर-काढीं समादाय मुण्डमाला-विभूषितः ।
तैनैव तिलकं^२ कृत्वा तत्तद्रूप्म-विभूषितः । श्मशाने च सकुञ्जपत्वा सर्व-
सिद्धीश्वरो भवेत् । कुंकुमागुरु-कस्तुरी-रोचनागुरु-चन्दनं । कर्पूरं पदमरगच्छ
केशारं हरि-चन्दनं । एकत्र साधितं कृत्वा प्रत्येकं साधयेत्ततः^३ । एतत्तिलक-
मालेण राजानं वशमानयेत् ।

जिहाग्रे रुधिरं कृत्वा^४ आकाशे च समाहरेत् । तैनैव गुटिकां^५ कृत्वा
भद्रकाली ततो^६ जपेत् । नीलां नीलपताकां च ललजिह्वां करालिकां ।
ललाट-तिलकं कृत्वा साधकां बीतभीः स्वयं । महाष्टमी-नवम्योस्तु संयोगे
पृथकः स्थितः । छाग-महिष-मेषाणां चतुर्दिक्षु चरात् क्षिपेत् । कबन्धात्

शब-साधन के सम्बन्ध में बताया है कि मुण्डों की मालादि
धारण कर यह फलप्रद किन्तु कठिन साधन करना होता है । प्राप्त
तिलक-विशेष के द्वारा सिद्धिलाभ और लोगों का वशीकरण
होता है ।

१ भद्रकाली, २ नीला, ३ नील-पताका, ४ ललजिह्वा
और ५ करालिका—इन पाँच देवताओं के मन्त्र बताकर लगुड़-
साधन तथा अन्य वीर-साधन बताये हैं ।

ये साधन योग्य और अनुभवी गुरु की प्रत्यक्ष देख-रेख में
ही करने चाहिए । पुस्तक के सहारे ये साधन करने उचित नहीं
हैं, इसी से यहाँ शब्दशः टीका नहीं की गई है ।

पाठभेद—१ स्थित्वा, २ जिहाग्रे रुधिरं, ३ साधयेत्सुधीः, ४ वीर,
५ गुटिका, ६ तत्र काली-मनुं, ७ करालिनीं । ८ तत्र इन्द्रीजीवी । ९ तत्र इन्द्रीजीवी ।

मुण्ड-पुंजं च^१ दोपादिभिरलंकृतं^२ । मध्ये कबन्धमास्तीर्यं तत्र मन्त्रवर्ण-रूप-वृक् । ताम्बूल-पूर-रक्तास्थमञ्जनाद्वित-लोचनं । कृत्वा काली-मनु^३ उजप्त्वा सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् ।

वियद्रविनि-युतं देवि नेत्रान्तं चन्द्र-भूषितं । बीजं प्रत्येक-द्रव्याणां मिलितानां च पार्वति । मूलमन्त्रेण मन्त्रं यो^४ जपेत् साष्ट-शत-त्रयं^५ । जिह्वाये रुधिरं गृह्ण चामुण्डे घोर-निस्वने । वर्लि गृह्ण वरं देहि रुधिरं गगने-उमले । कालि कालि प्रचरणोग्रे ततोऽस्त्रं^६ कवचं ततः । कालिकेयं समाख्याता वीराणां हित-कामया ।

कूर्चयुम्मं महादेवि नीलायाः कथितं तव । वियदि-भृगु-युतं देवि कल-मिथ्रं रवी रतिः । चन्द्र खराङ्ड-समायुक्तं ततो नील-पदं ततः । पताके हूँ फडन्ते^७ स्यात् पूर्व कूट^८ मनुर्मतः । सुगुप्तेयं महा-विद्या तव स्नेहादि-होदिता^९ । जयश्री-करणी^{१०} देवी पताकेव^{११} रणस्थले तेन नील-पताकेयं विद्या वै वीर-^{१२} साधने । उग्र-चरणा महाविद्या या पुरा कथिता प्रिये । ललिजहा तु सा प्रोक्ता योज्या वै वीर-^{१३} साधने । यासौ विद्या^{१४} महातारा सा करालेति कीर्तिता ।

भूमिपुत्र-समायुक्ता यामावास्या शुभोदया^{१५} । भाद्रे पुरुष-योगेन^{१६} तस्यां वीर-वरोत्तमः । विष्णुक्रान्तां समानीय निक्षिपेन्मृत-भूमिषु । तत्र तां

पाठभेद—१ कबन्ध-मुण्ड-पुंजं च; कबन्धमुण्ड-पुज्ञादीन्, २ लंकृतः; लंकृतान्, ३ तत्र मनु^३, ४ मन्त्रज्ञो, ५ सार्द्ध-शत-द्वयं; सार्द्ध-शत-त्रयं, ६ ततः फट्, ७ फडन्तं, ८ पूर्व-कूर्च, ९ न्मयोदिता, १० करिणी, ११ पताकेयं, १२ योज्या वै नीलं, १३ नील; मयोक्ता वै संयोज्या नील, १४ आदिविद्या; या सा विद्या, १५ शुभप्रदा, १६ पुष्कर-योगेन; पुष्कर-योगेन

साधितां कृत्वा तदिने मत्स्य-हट्टके^१ । तत्र तं साधितं^२ मत्स्यमेक-मूल्येन दापयेत् । तज्जलेनाभिषेकं च पूर्ववच्च शिरोपरि^३ । साधितां विजयां तस्य उदरे मुख-वर्त्मना । क्षिप्त्वा तत्र खनेन्मत्स्यमञ्जनाद्वित-लोचनः । पूर्व-द्रव्येण तिलकमुत्त्वाय^४ च मनु^५ जपेत् । स्वयं वै तत्र^५ भगवान् भैरवो लगुडान्तिः । गत-भीतिस्ततो वीरस्तं विलोक्य जपेन्मनु^६ । यदि भाग्य-वशाद् देवि लगुडस्तत्र लभ्यते । तदा स्वयं भैरवोऽसौ स्वयं वीरेश्वरो भवेत् ।

मत्स्यमानीय देवेशि निक्षिपेत् पितृ-कानने । तत्रासकृज्जपित्रा तु देवता-मेलनं भवेत्^६ । तत्र नत्वा महादेवं महादेवीं च भाविनि^७ । तदृ-भस्म तिलकं कृत्वा स्वयं वीरेश्वरो भवेत् ।

निशायां मृत-हट्टे च उन्मत्तानन्द-भैरवः । दिग्वासा विमली भस्म-पूण्यो मुक्त-केशकः । कपाली खड्ग-हस्तश्च जपेन् मातृक्या यदि । तदा तस्य महादेवि सर्वसिद्धिः करे स्थिता^८ । डाकिनीं योगिनीं वापि अन्यं चा भूतलाङ्गनां । तत्राप्यानीय^९ संपूर्ज्य सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।

गर्भेण जोव-हीनानां जन्मनां वीर^{१०} साधने । ब्राह्मणं गोमयं त्यक्त्वा^{११} साधयेद् वीर-साधनं । मृतासनं विना देवि पूजयेत् पार्वतीं शिवां । तावत् कालं वसेद् पीरे यावदाहूत-संप्लवं । महाशवाः प्रशस्ताः स्युः प्रशान्त^{१२} वीर-साधने । क्षुद्राः प्रयोग-कर्तुं गां प्रशस्ताः सर्व-सिद्धिदाः । एवं

पाठ-भेद—१ मृत-हट्टके; २ मृत-सूतके, ३ प्रसारितं, ३ शवोपरि, ४ तिलकं पूर्व-द्रव्येण उत्थाय; तिलको सर्व-द्रव्येण उत्थाय, ५ स्वयमायाति, ६ तत्र सकृज्जपित्रा तु देवतामिव लंघयेत्, ७ भाविनि, ८ प्रजायते, ९ तत्र आनीय, १० नील, ११ गोमये कृत्वा, १२ कालिका ।

वीर^१ कर्म देवि कथितं चतवानधे । न कस्यचित् प्रवक्तव्यं^२ मम^३
प्रोत्या महेश्वरि ।

॥ श्री काली-तन्त्रे वीर-साधना नाम षष्ठ पटलः ॥

पाठ-भेद—१ नील, २ प्रयोक्तव्यं, ३ तव

सप्तम पटलः

रहस्य पुरश्चरण-विधिः

देव्युवाच—ज्ञातमेतन्मया देव^१ त्वत्प्रसादान्महेश्वर । अशक्तानां तु
गे देव पुरश्चरणमुच्यतां । सिध्यन्ते च यथा मन्त्रा लभन्ते सिद्धि-
मुत्तमां ।

भैरव^२ उवाच—श्मशाने च पुरश्चर्या कथिता भुवि^३ दुर्लभा ।
अथवान्य-प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते^४ । कुजे वा शनिवारे वा नर-मुण्डं
समाहृतं । पश्च-गव्येन मिलितं चन्दनाद्यैविशेषतः । निक्षिप्य भूमौ हस्तार्ध-
मानत कानने वने । तत्र तद्विसे रात्रौ सहस्रम् यदि मानव एकाकी
प्रजागरन्मन्त्रं स भवेत्कल्प-पादपः ।

सप्तम पटल का सारांश

जो माधक विस्तृत पुरश्चरण-विधान करने में असमर्थ हैं,
उनके लिए इस पटल में संक्षिप्त विधान बताए गए हैं—

१ मङ्गल या शनिवार के दिन एक नरमुण्ड लेकर पञ्चगव्य
और चन्दनादि से उसका शोधन करे । फिर श्मशान में आधे हाथ
का गड्ढा बनाकर उसे उसमें स्थापित करे । तदनन्तर उसके ऊपर
आगन विद्धाकर उसी दिन रात में एक सहस्र जप करने से सिद्धि
मिलती है । (यह वीराचार-सम्मत है)

पाठ-भेद—१ ज्ञानमेतन्महादेव; ज्ञातमेतन्महादेव, २ भगवान्, ३ देवि,
४ मुच्यते ।

अथवान्य-प्रकारेरण पुरश्चरणमिष्यते^१ । शवमानीय तद्द्वारे तेनैव परिखन्यते^२ । तद्दिनात्तद्विनम् यावत्तावदष्टोत्तरम् शतम् । स भवेत्सर्वं सिद्धिंशो नात्र कार्या विचारणा ।

२ मङ्गल या शनिवार के दिन एक शव को लाकर उसे प्रथम विधानोक्त नरमुण्ड के समान मिट्टी में स्थापित कर उसके ऊपर बैठकर एक मङ्गलवार या शनिवार से प्रारम्भ कर दूसरे मङ्गलवार या शनिवार तक प्रतिदिन रात्रि में एक सौ आठ बार जप करे, तो सिद्धि मिलती है । (यह भी वीराचार सम्मत है)

३ कृष्ण हो या शुक्लपक्ष—अष्टमी या चतुर्दशी को एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक निर्भय होकर एकासन पर बैठकर जप करने से सिद्धि मिलती है । (यह पशु और वीर दोनों भावों से साध्य है)

४ चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण में ग्रास से प्रारम्भ कर मोक्ष होने तक जप करे, तो सिद्धि मिलती है । इस पुरश्चरण में ग्रहण के बाद होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण-भोजन करना होता है । (यह भी पशु और वीर दोनों भावों से सम्मत है)

५ शरत्काल के देवी पक्ष में चतुर्थी से लेकर नवमी तक प्रतिदिन भक्तिपूर्वक देवी की पूजा कर प्रति रात्रि में अन्यकार में अकेले बैठकर सहस्र बार जप करे । अष्टमी और नवमी को उपवास रखे । इससे मन्त्रसिद्धि होती है ।

(यह-वीराचार-सम्मत है)

पाठ-मेद—१ मुच्यते, २ परिखन्य च

अथवान्य-प्रकारेरण पुरश्चरणमुच्यते । अष्टम्यां च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि । सूर्योदयात् समारम्भ यावत् सूर्योदयान्तरं । तावजप्त्वा निरातङ्कः पर्व-सिद्धीश्वरी भवेत् ।

अथवान्य-प्रकारेरण पुरश्चरणमिष्यते । चन्द्र-सूर्य-ग्रहे चैव^१ ग्रासावधि-विमुक्तिः । यावत्संख्यं मनुं जप्तातात्र^२ द्वोमादिकं चरेत् । सूर्य-ग्रहण-कालाद्वि नान्यः कालः प्रशस्यते^३ । तत्र यद्यत् कृतं कर्म तदनन्त-फलं^४ लभेत्^५ ।

अथवान्य-प्रकारेरण पुरश्चरणमिष्यते । शरत्काले चतुर्थादि-तत्वम्यन्तं विशेषतः । भक्तिः पूजयित्वा तु रात्रौ तावत् सहस्रकं । जपेदेकाको^६ विजने केवलं तिभिरालये । अष्टमादिन-तत्वम्यन्तमुपत्रात्-परो भवेत् । अन्यत्र गुरु गार्वस्य लंघनं नैव कारयेत् ।

अथवान्य-प्रकारेरण पुरश्चरणमिष्यते^७ । अष्टमी-सन्धि-बेलायामष्टोतर-शता-गृहैः । प्रविश्य मन्त्री विधि-वताः समभ्यर्च्य यत्नतः । पूर्वोक्त-कल्पमासाद्य पूजादिकं समाचरेत् । केवलं काम वोऽसौ जपेदष्टोतरं शतं । तासां

६ अष्टमी और नवमी के सन्ध्य-काल में एक सौ आठ गुणती मित्रां की पूजा कर पूर्वोक्त विधि से देवी का अर्चन कर एक सौ आठ बार मन्त्र जप करने से सिद्धि मिलती है ।

(वीराचार-सम्मत)

७ आकृट शक्ति-मन्त्र में मन्त्र की भावना कर उसका पूजनादि संस्कार कर देव-भाव से मन्त्र-जप पूर्वक तत्पर हो । फिर विसर्जन कर नमःकार पूर्वक जप करे । प्रातः स्त्रियों को भोजन करावे, तो तिस्समन्देह सिद्धि मिलती है ।

पाठ-मेद—१ चन्द्र-सूर्योपलगे २ च, जप्त्वा ताव; जपेन्मत्र' ताव । ३ विशेषतः, ४ सर्वमन्त्रन्त-कलदं, ५ अत्र यद् यत् कृ कर्म तदनन्ताय कल्पते, ६ देकस्तु ७ मुच्यते, ।

पाठ० ३

हु पत्र-मूलेषु उत्कां संगृहा मस्तके^१ । मन्त्र-सिद्धिर्भवेत् सदो^२ लता-दर्शन
पूजनात् ।

अथवान्य-प्रकारेण पुरश्चरणमुच्यते । आकृष्ट्यायाः कुलागरे^३ लिखित्वा^४
मन्त्रमेव च । सम्पूज्य^५ तत्र संस्कारं कृत्वा तस्य निवेद्य च^६ ।
किञ्चिज्जप्त्वा मनुं नीत्वा देवता-भाव-तत्परः । तां विसूज्य नमस्कृत्य स्वयं
जप्त्वा सुसंग्रहतः । प्रातः स्त्रीभ्यो बर्लिं दत्वा मन्त्र-तिद्विनं संशयः ।

अथवान्य-प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते । गुरुमानीय संस्थाप्य देव-वत्-
प्रूजनं विभोः । वस्त्रालङ्घार-हेमाद्यः सन्तोष्य गुरुमेव च । तत्सुरं तत्सुरा
चैव तत्पत्नीं च विशेषतः^७ । पूजयित्वा मनुं जप्त्वा स्वयं सिद्धोश्वरो
भवेत् ।

अथवान्य-प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते । सहस्रारे गुरोः पाद-पदमं ध्यात्वा
प्रपूज्य च । केवलं देव-भावेन जप्त्वा सिद्धोश्वरो भवेत् । गुरुवे दक्षिणां

द गुरुदेव को अपने घर बुलाकर इष्टदेवता-रूप में उनकी
पूजा करे और वस्त्र, अलङ्घार, स्वर्णादि द्वारा उन्हें सन्तुष्ट
करे । गुरु की पत्नी, पुत्र, कन्या की भी पूजा करे । इस प्रकार कर
मन्त्रजप करे तो सिद्धि मिलती है ॥४॥

(पशु और वीर दोनों भावों से सम्मत)

६ सहस्रार में गुरुदेव के चरण-कमलों का ध्यान कर देवता-
भाव से गुरुपूजा करते हुये मन्त्रजप करने से सिद्धि मिलती है ।
प्रत्येक क्रिया गुरुदेव की आज्ञा लेकर ही करे और उन्हें यथा-
शक्ति दर्शणा प्रदान करे । गुरुदेव की अनुमति मिलने से दुष्ट

पाठभेद—१ पद-मूलेन उत्त्वा संगृह्य करके, पाद-मूलेन उग्रां
सम्पूज्य यत्ततः, २ तस्य, ३ फन्ताः कर्ति- लतागरे, ४ भावयेत्, ५
प्रपूज्य, ६ निवेदयेत्, ७ तथैव च ।

॥४॥ यहाँ जपसंख्या नहीं बताई गई है । ऐसी स्थिति में सदा
एक सहस्र आठ बार जप करने का विधान माना जाता है

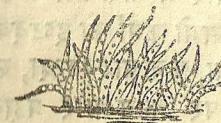
दधाद्^१ दधा-नवभवमात्मनः । गुरोरनुज्ञा-मादेण दुष्ट-मन्त्रोऽपि स्थियात् ।
गुरु^२ विलंघ्य शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकारः सुरैरपि । एषां च मन्त्र-तन्त्राणां
प्रयोगः क्रियते यदि । गुरु-ववत्रं दिना देवि सिद्धि-हानिः^३ प्रजायते ।

अथवान्य-प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते । स्वकीयां परकीयां वा स्त्रिय-
मानीय साधकः । शतमष्टोत्तरं जप्त्वा योनिमामन्त्र्य तत्व-वित् । गच्छन्
परम-तत्वज्ञः सहस्रं जपते यदि । तदा मन्त्रो भवेत् सिद्धो दुष्ट-मन्त्रोऽपि
पार्वीति । एतत्प्रयोगं देवेशि न कर्मै दर्शयेत् वर्चन्ति । एतन्मन्त्रं च तन्त्रं
च शिष्येभ्योऽपि न दर्शयेत् । यदि वा दर्शयेत्मोहात् कुबुद्धिः कुल-
माशकः । अन्यथा प्रेत-राजस्य भवनं याति निश्चितं ।

॥ इति श्रीकाली-तन्त्रे रहस्य-पुरश्चरण-विधिः नाम सप्तमः पठलः ॥

मन्त्र भी सिद्ध हो जाते हैं । गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करने से
तानिक क्रिया करने का अधिकार नहीं रहता । गुरु से उपदेश
लिये बिना जो क्रिया करता है, उसे सिद्धि नहीं मिलती ।

१० श्वकीया और परकीया शक्ति की विधिवत् पूजा करने से
सिद्धि मिलती है । इसकी विधि गुरुमुख से जाननी चाहिए ।



पाठभेद—१ दत्वा, २ नैव सिद्धिः, ३ तस्य जायते ।

पाठभेद—१ दत्वा, २ नैव सिद्धिः, ३ तस्य जायते ।

अष्टम पटलः

आचार-विधिः

भैरव उवाच—अयाचारं प्रवक्ष्यामि यत्क्रते^१ इमुतमश्नुते। सर्व-भूत हिते युक्तः समयाचार-पालकः। अनित्य-कर्म-सन्त्यागी नित्यानुष्ठान-तत्परः। मन्त्रारात्रेण शिव-भावेन^२ तत्परः। परस्यां देवताणां च सर्व-कर्म-निवेदकः। अन्य-मन्त्राचेन-श्रद्धामन्त्र-मन्त्र-प्रपूजनं। कुल-स्त्री-वीर-निन्दां च तद्व्यवस्थाप-हारणं। स्त्रीयु रोषं प्रहारं च वर्जयेन्मतिमात्र सदा।

स्त्री-मयं च जगत्सर्वं स्वयं तावत्^३ तथा भवेत्। पेयं चव्यं तथा चोषं भश्यं भोजयं गृहं स्वयं^४। सर्वं च युवती-रूपं भावयेन्मतिमात्र सदा^५ य

अष्टम पटल का सारांश

इस पटल में समयाचार अर्थात् कुलाचार का वर्णन हुआ है। समयाचार-परायण साधक सभी प्राणियों के कल्पाण-कर्य में लगा रहता है, काम्य कर्मों को छोड़ देता है, नित्यकर्मों का अनुष्ठान करता है और मन्त्राराधना के द्वारा शिव-भाव में तत्पर रहता है। वह अपने सभी कर्मों को इष्टदेवता के अर्पण कर देता है; अन्य मन्त्र की पूजा, कुत्ताचार-निन्दा, स्त्रो-निन्दा, वीर-निन्दा, वीर-द्रव्यापहरण, खो पर क्रोध और प्रहार-ये सभी कर्म नहीं करता है।

पाठमेद—१ कुत्ता, २ भावन, ३ स्वयं चैव, ४ मुवं; शुभं, ५ स्वयं च युवती-रूपं भावयेद्-यतसानसः।

आचार-विधिः

३७

स्त्रीजां युवती वीक्ष्य नमस्कुर्यात् समाहतः^१। यदि भावयवज्ञैव कुल-दृष्टिं^२ रुपायते^३। दैव मानसीं शूजां तत्र तासां प्रकल्पयेत्। बालां वा योवनोऽमसां वृद्धां वा युवतीमपि। कुत्सितां वा महादुष्टां^४ नमस्कृत्य विभावयेत्। तासां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यमपि वर्जयेत्^५। सर्वथा नैव कर्त्तव्यमन्यथा सिद्धि-रोध-कृत्।

स्त्रियो देवाः स्त्रियः प्राणाः स्त्रिय एव विभूषणं। स्त्री-सज्जिना सदा भाव्यमन्यथा स्व-स्त्रिया अपि^६। विपरीत-रता सा तु^७ भविता हृदयो-परि। तद्वस्तावचितं पुष्पं तद्वस्तावचितं जलं^८। तद्वस्तावचितं भौजयं देवताम्यो निवेदयेत्। सर्वं तदक्षयं प्रोक्तं देवता-पूजनात् प्रिये। विपरीत-रतासक्तोऽप्यटोत्तर-सहस्रकं। अष्टोत्तर-शतं वापि तदा सिद्धिः प्रायते।

इस जगत् को स्त्री-रूप में और स्वयं अपने को भी स्त्री-रूप ही ऐसे। बालिका, युवती, वृद्धा, सुन्दरी, कुरुपा, दुष्टा इत्यादि विद्यी भी स्त्री-रूप को देखते ही मन ही मन उसकी पूजा कर उसे प्रणाम करे। स्त्री ही देवता है, स्त्री ही प्राण और स्त्री ही विभूषण है—इस प्रकार की चिन्ता करे। स्त्री द्वारा लाये हुए पुष्प, जल और भौजयद्रव्यों द्वारा देवता की पूजा करने से अक्षय फल होता है।

१८८६ हृदय के उपर स्त्री के स्वरूप का व्यान विपरीत रता चरा मैं करे। १००८ या १००८ बार जप करने से अभीष्ट फल मात्र होता है।

पाठमेद—१ यु-संयतः, २ दृष्टिः प्रजायते, ३ महा-नष्टां, सप्ता युष्टां, ४ मप्रियं तथा, ५ स्व-स्त्रियामपि, ६ विपरीत-रता-सप्ता, ७ परा।

स्त्रो-द्वे षो नैव कर्तव्या विशेषात् पूजनं क्रियाः^१ । जप-स्थाने महाशंखं निवेशो द्वयं जपं लभेत् । बिकं पश्यत् स्वयात् गच्छन् विशेषात् कुलजां शुभां^२ । भक्तव् ताम्बून-मत्स्यां रव^३ भक्ष्य-द्रव्यं प्रथाहिति । मत्स्यं मांसं तथा क्षीद्रं ताता-द्रव्य-समन्वितं^४ । भक्ताद्य-शेषभक्षणाणि दत्तवा द्रव्यं जपेन्मनुं । दिक्काल-नियमो नात्र स्थित्यादिनियमो न च । सर्वथा पूजयेद् देवीमस्नातः कृत-भोजनः । महानिश्चयशूची देशे वर्ति मन्त्रेण दापयेत् । न जपे काल-नियमो नाचर्चिदिषु वलिष्वपि । स्वेच्छान-नियम उक्तोऽन्त महामन्त्रस्य सावने । वस्त्रात्तन-देहागार-स्वान-स्पर्शादिवारिणः^५ । शुद्धिं न चावरेत्तत्र निविकृतं मनश्वरेत् । सर्व एव शुभः कालो ताशुद्धिविद्यते व्यव्यक्तिः । न विशेषो दिवा-रात्रौ न सन्ध्यायां महानिशि । नात्र शुद्धे रोका-स्ति न चामेद्यादि-दूषणं । सुगन्धिं श्वेत-लोहित-कुमुमे रचयेद् दलैः । विल्वैर्मुखकावैश्च तुलसी-वजितैः शुभैः । नामो विद्यते सुध्रुकि च धर्मो महावैराग्यः ।

महाशङ्क की माला में जप करे । यथाहचि मधु, मत्स्य, मांस, ताम्बूल और अन्यान्य द्रव्य खाकर विशेषकर कुलजा स्त्रो का दर्शनादि कर जप करे ।

इस आचार में जगादि के दिक्, काल और आसवादि के कोई नियम नहीं होते । बिना नहाये हुए और खा-पीकर महा-निशा में अपवित्र स्थान में देवी की पूजा और वर्ति प्रदान करे । सभी वस्तुओं को पवित्र समझे । किसी भी द्रव्य के शुद्धिविधान की आवश्यकता नहीं है ।

पूजादि के लिए सभी काल शुभ हैं । दिन, रात, सन्ध्या, महानिशा आदि में कोई भेद नहीं है । सभी समय जप

पाठमेद—१ कुलजां शुभां, २ भुजानो मदनोऽगतः, ३ गन्त-ताम्बूल-माल्यं च; भक्षंस्ताम्बूलमन्यांश्च द्रव्यात्, ४ भक्ष्य-द्रव्यात् प्रथाहिति, ५ वारिणां ।

भवेत् । सोन्द्राचारोऽत्र गदितः प्रचरेद् धृष्ट-मानसः^१ । कृतार्थं मन्य-मानसतु गन्तुष्टो हृष्ट-मानसः ।

इयाचार-परः श्रोमात् जप-पूजादि-तत्परः । पालकः कुल-तत्वानां पर-सले प्रतीयते । उदिताकृतिरानन्द-मयः^२ संसार-मोक्षकः । अणिमाद्य-विषयद्वीपः सावको देवता^३ भवेत् ।

॥ इति श्रीकाली-तन्त्रे आचार-विधिः नाम अष्टमः पठलः ॥

और पूजादि किया जा सकता है । सुगन्धि, श्वेत-रक्त पुष्प, विल्वपत्र आदि के द्वारा देवी की पूजा करे । तुलसी-पत्र के द्वारा पूजा न करे ।

इस प्रकार के आचार में तत्पर होकर जो साधक जप-पूजादि करता है, वह आतन्दमय परतत्व में विलीन होता है । संसार में यथाकाल अन्तर्गत नहीं होता । अणिमादि अष्टसिद्धिवर्याँ भी उसे उपायम् होती हैं ।



पाठमेद—१ शुद्ध-मानसः; धृष्ट-मानसः, २ मदिरानन्द-मानसः संसार-भोक्ता गता, मदिरानन्द-चित्तस्तु संसार-मोक्षकः गता, ३ सिद्धि-विषयद्वीपः सावकोऽत्

महा-वाचित्प-संकटे । महारणे महाशून्ये महास्थाने^१ महारणे । दुरालयाने
 २ पुरावारी तुभिंशे दुर्गिमितके । समस्त-बलेश-संघाते स्मरणादेव नाशयेत् ।
 ज्ञाना ज्ञानं ब्रह्म-ज्ञानं^३ ध्यानमस्यात्म-चिन्तनं । तस्मादस्याः समा-
 निषा नाशित सन्ते न संशयः । शमशान-शयनो वीरः^४ कुल-स्त्रीभिविहार-
 यत् । कुणामृत-निषेवी च काली-तन्त्रार्थ-चिन्तकः । ब्रह्मादिभवने तस्य
 सभो नाशित कुरुतः परः^५ ।

३ एव मुकुटी लोके स एव कुल-भूषणः । धन्या च जननी तस्य येन
 देवी समर्चिता । वक्त्रे सरस्वती तस्य लक्ष्मी स्तस्य सदा गृहे । तीर्थानि
 ये हि निषिद्धिते येन देवी समर्चिता । धनेन धन-नाथश्च तेजसा भास्करोपमः ।

४ ये साधक इस मन्त्र से देवी की अर्चना करता है, वही
 मुकुटी और कुल भूषण है । उसकी जननी धन्य है । उसके मुख
 में सरस्वती, घर में लक्ष्मी और देह में तीर्थ-समूह सदा निवास
 करते हैं । धन में वह कुबेर-तुल्य, तेज में सूर्य-तुल्य, बल में वायु-
 तुल्य, ज्ञान में गन्धर्व-तुल्य, दान में कर्ण-तुल्य, ज्ञान में दत्ता-
 वैय-तुल्य, शशि-नाश में अर्णिन-तुल्य, पाप-नाश में गङ्गा-तुल्य,
 मुख-वान में चन्द्र-तुल्य और शासन में यम-तुल्य होता है । वह
 काल के समान दुरासद, समुद्र के समान गम्भीर, वृहस्पति के
 समान वक्ता, पृथ्वी के समान सहनशील और छियों के लिए
 कामदैव के समान होता है ।

५ पाठमेद—४ महाज्ञाने,५ दुराध्वाने,६ ज्ञानमेव,७ शमशाने
 सभो नाश,८ शमशाने वीर-शयनः,९ स्त्रि किमु चापरः ।

नवम पटलः

विद्या-फल-विधिः

भैरव उवाच—एवं समरत विद्यानां राज्ञी स्तोतुं न शक्यते ।
 वबन्न-कोटि-सहस्रै रतु जिहा-कोटि-शतैरैषि । सर्वसिद्धे^१ परा भूमिरनि-
 रुद्ध-सरस्वती । तरमादस्या ज्ञान-मात्रात् सिद्धोऽध्यौ भवन्ति हि । अनि-
 रुद्ध-सरस्वत्या ज्ञान-मात्रेण साधकः । पाणिङ्गत्ये च कवित्वे च
 वागीश-स्मतां व्रजेत् । तस्य पाणिङ्गत्य-वैदाद्य-विपत्ति-प्रपद-कल्पनात्^२ । देवा
 अपि विलज्जन्ते कि पुनर्मानवादयः ।

अस्ति चेत् त्वत्समा नारी मत्समः पुरुषोऽस्ति चेत् । अनिरुद्ध-सरस्वत्याः
 सभो मन्त्रोऽस्ति वै तदा । अस्या जपो ब्रह्म-जपो ज्ञानमस्यात्म-चिन्तनं ।
 योग-सन्धारणा सम्बद्ध्यानमस्या न संशयः । महापदि महापापे महा-ग्रह-
 निवारणे । महाभये महोत्पात महाशोके महाभये^३ । महामोदे महाऽसौख्ये

नवम पटल का सारांश

इस पटल में अनिरुद्ध सरस्वती अर्थात् बाईस अक्षर के मन्त्र
 का फल वहा है । इस मन्त्र की साधना से सब सिद्धियाँ मिलती
 हैं । इस मन्त्र का ज्ञान प्राप्त वर साधक पाणिङ्गत्य व कवित्व में
 वृहस्पति के समान होता है । इसका जप ब्रह्म जप, इसका ज्ञान
 आत्म-चिन्ता अर्थात् ब्रह्मचिन्ता और इसका सम्यक् ध्यान ही योग
 है । इस मन्त्र का समरण करने से महान् विपत्ति, महापाप, ग्रह-
 दोष, महाभय, महा उत्पात, महाशोक, महारोग, महामोह, महा-
 दारिद्र्य आदि दूर होते हैं ।

पाठमेद—१ सर्वसिद्धेः, २ जल्पनात्, ३ महाजने; महोत्पवे ।

बलेन^१ पवनो ह्योष येन देवो समर्चिता । गणेन तुम्बुरुः साक्षादाने
कर्ण-समस्तथा^२ । दत्तात्रेय-समो ज्ञानी येन देवो समर्चिता । वहिरिव
रिपोहन्ता गणेत्र मल-नाशकः । शुचौ शुचे-समः साक्षादिन्दो^३ इव सुख-
प्रदः । पितृ-देव-समः शास्ता कालस्येव दुरासदः । वारीश इव गम्भोरो
निर्वात इव^४ दुर्द्वारः । वृहस्पति-समो वाग्मो धरणी-सहृशः क्षमो । कन्दपं-
सहृशः ख्रीणां^५ येन देवी समर्चिता ।

अहो भाष्यमहो लोके कुल-ज्ञान-परायणः^६ । तेषां मध्येऽपि यः^७
कोऽपि काली-साधन-तत्परः । त्यजसि त्वं वरं चैतत्^८ पुमांसं परमं तथा ।
मादशं^९ तु क्वचित् काले त्यजसि त्वं कदाचन^{१०} । कालो ज्ञानिनमासाद्य
न त्यजसि कदाचन । नहि काली-समा विद्या^{११} नहि काली-समं फलं
नहि काली-समं ज्ञानं नहि काली-समं तपः । ये गुणाः परमेशस्य पद-
निर्वात इव दुर्द्वारः ।

कुलज्ञान-परायण साधक दुर्लभ हैं, उनमें भी काली-साधक
और भी दुर्लभ हैं। देवो शिव को भले छोड़ दें, किन्तु काली-
साधक का परित्याग वे कभी नहीं करतीं।

काली के समान विद्या नहीं, काली के समान फल नहीं,
काली के समान ज्ञान नहीं, काली के
समान कोई तपस्या नहीं। परमेश्वर में जितने भी गुण
हैं, वे सभी काली-तत्त्वज्ञान से साधक को प्राप्त होते हैं। लता-

पाठभेद—१ वेगेन, २ द्वानेन वासवो यथा, दैशर्यें वासवो यथा,
३ दिन्दु, ४ वृश्चिंह इव, निश्चर्तेरिव, ५ ख्रीषु, ६ कुल-ज्ञानी भवेन्नरः,
७ मध्ये प्रियः; मध्ये च यः, ८ परं चैव, ९ कदाचित्, १० महेशं,
११ जगन्मये; शुचिस्मिते, १२ पूजा ।

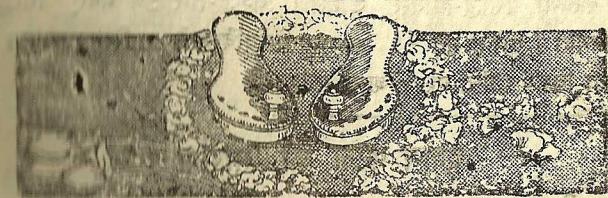
कल-विधाविनः । ते गुणाः सन्ति सर्वज्ञे^१ काली-तत्त्वस्य नाम्यथा ।
जानिका-हृष्ट-ज्ञानी लता-साधन-तत्परः । देववन्मानवो भूत्वा लभेन्मुक्तिं
व गायती^२ ।

इति ते कवितं सम्यक् कालिका-तत्त्वमुत्तमं^३ । अतेन सम्भगात्याय
पर्वतम्^४ फलं लभेत् ।

॥ इति ओकाली-तत्त्वे विद्या-कल-विधिर्वाम नवमः पटलः ॥

तत्त्वतत्त्वर काली-तत्त्व-ज्ञानो साधक देव-नुल्य होकर क्रमा-
मुक्ति जाग पाता है ।

काली-तत्त्व उक्त प्रकार का है। इसके प्रति समुचित रूप से
साधना रखो हुये साधना करते से सभी धर्मों का फल प्राप्त किया
जा सकता है ।



पाठभेद—१ वेगेन, २ द्वानेन वासवो यथा, दैशर्यें वासवो यथा,
३ काल्याक्षत्त्वमुत्तमं, ४ सर्व-

दशम पटलः

सिद्ध-विद्या-विधिः

यथा काली तथा दुर्गा यथा दुर्गा तथोन्मुखी । यथा तारा तथा काली^१ यथा नीला तथोन्मुखी । दुर्गायाः कालिकायास्तु व्यानं समभिहोचते^२ । महाचीन-क्रमेणैव तारा शीघ्र-फल-प्रदा । गन्धवर्वाय-क्रमेणैव पञ्चमीभुक्ति-मुक्तिदा^३ । महाचीन^४- क्रमेणैव कालिका फल^५-दायिनी । कालिकाग्र-मुखी शरता दत्तात्रेय-विभाविता^६ । सप्त-सप्ततिभेदेन^७ क्षीविद्या विदिता भुवि । तासां तु समता ज्ञेया गुप्त-साधन-साधने । चत्वारिंशत्-प्रकारा च^८ भैरवी परिकीर्तिता । तासां तु समता ज्ञेया गुप्त-साधन-साधने । या या^९ विद्या महाचण्डा तासामेष^{१०} विधिर्मतः । महाचीन^{११}-क्रमेणैव द्विष्टमरता च सिद्धिदा^{१२} । यस्मिन् मन्त्रे य आचारस्तस्मिन्^{१३} धर्मस्तु तादशः । कृतार्थस्तेन जायेत् स्वर्गो वा मोक्ष एव^{१४} वा । आन्तरन्त्र न कर्तव्या सिद्धि-हानिस्तु जायते । विशुद्ध-चित्तोऽन्त्र भवेत् सिद्धिः स्यादपर्वगदा । एवं तु तत्^{१५} क्षणात् सिद्धिविस्मयो नास्ति चापरः । विस्मिता विलयं यान्ति पशवः शास्त्र-मोहिता ।

दशम पटल का सारांश

काली, तारा, दुर्गा, उन्मुखी—इनकी उपासना-पद्धति एक जैसी है । काली और दुर्गा को एक समान ही समझना चाहिए ।

पाठभेद—१ नीला, २ सम्यग्होदितं; समभिहोदितं, ३ भुवि दुर्लभा, ४ नील, ५ सिद्धि, ६ विभावना, ७ भेदा सा, ८ प्रकारेण, ९ महा, १० भेव, ११ नील, १२ विधिर्मत, विधिः स्मृतः, १३ तत्र, १४ र्खर्गं वा मोक्षमेव; मुक्तिरेव; मोक्षश्च एव, १५ एतत् तत् ।

भैरव उवाच—कालिका-हृदयं विद्यां सिद्धि-विद्यां महोऽस्यां । पुरा यैत यथा जप्तवा सिद्धिमापुर्दिवौकसः । कामाक्षरं वह्नि-संश्विन्दिरा-नाद-विनृष्टिः । मन्त्राराजविदं स्वातं दुर्लभं पाप-चेतसां । सुलभं शुभदं^१ भवत्या साधकानां महात्मनां । त्रिगुणा तु विशेषेण सर्व-शास्त्रं प्रबोधिका । अनया सहृदयी विद्या नास्ति सारस्वत-प्रदा । आकर्षण-वशोकार-मारणो-भवत्यां तथा । शान्ति-पृष्ठ्यादिकर्माणि सावधेन नाऽचिरात् । किं वस्त्राभ्योनतापि वर्णाणुं नैव शक्यते । जिह्वा-कोटि-पद्मन्त्रे^२ तु वक्त्र-कोटि-भौतिरपि । अनया सहृदयी विद्या अनया सहृदयो जपः । अनया सदृशं ज्ञानं न भूते न भविष्यति ।

यथा—पूजादिकं सर्वं साधनं च्छुरस्तिक्या । अनिरुद्ध-सरस्वत्याः समानं सर्वमृतिष्ठ^३ । रक्तैराकर्षणे पृष्ठ्ये पीतैः स्तम्भन-कर्मणि । मारणे पृष्ठ्या-पृष्ठीत् पूजयेद् घोर^४ दक्षिणां ।

काली और तारा महाचीनक्रम से तथा श्री विद्या गन्धवर्कम से शीतल कल देती हैं । उप्रमुखी काली, सप्त-सप्तति प्रकार की श्रीविद्या और चत्वारिंशत प्रकार की भैरवी—गुप्तसाधन में ये सब समान हैं । उपर्युक्ता सभी देवता महाचीन-क्रम से ही सिद्धि-दायिनां हैं । जिस मन्त्र के लिए जो आचार निर्दिष्ट है, उसों में विशुद्ध चित्त ये तपार रहने से मुक्ति मिलती है ।

यजिणा काली का एकाक्षर मन्त्र है—कक्षार-सहित रेफ, दीर्घ रैकार और नादविन्दु (कीं) । इस मन्त्र को ‘कालिका-हृदय’ कहते हैं । यही ‘सिद्ध-विद्या’ नाम से प्रसिद्ध है । उक एकाक्षर मन्त्र का तीन बार उच्चारण करने से श्वकर मन्त्र बनता है । इस मन्त्र से विद्या-लाभ, आकर्षण, वरीकरण, उच्चाटन, मारण, शान्ति, पृष्ठ्य, आदि कर्म सिद्ध होते हैं । इन दोनां मन्त्रों के

पाठेन—१ तत्-तत्र; सुलभा, शुभदा । २ समं पूर्ववदाचरेत्; साधनं सर्वमृतिः; साधनं पूर्वमीरितं, ३ पूजयेदेव

आद्यैक-वीजं वीजानां तथैवान्तेऽपि चैककं^१ । दक्षिणो कालिके चेति
मध्ये संयोज्य मन्त्र-वित् । स्वाहान्तं मन्त्रमुच्चार्यं भवेदाकर्षणं महत् ।
लोहितांकुश-हरतां च एक-शूल-धरां^२ तथा । महाकाल-समासीनां^३
ध्यात्वा चावृषणं महत्^४ । स्थावरं जङ्घमं चैव पातालं तलगं^५ तथा ।
आकर्षयात् मन्त्रज्ञः किमन्यद् भुवि योषितः । अयुर्तैक-जपः प्रोक्तः सदाकर्षणं
कर्मणि ।

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरण मुक्तम् । कूर्च-लज्जा-द्वयं वीज-द्वयं
ठान्तं^६ तथैव च । योजयित्वा जपेद् विद्यामयुतं^७ वशयेद् द्वयुं^८ । ध्यान-
मस्या^९ प्रवक्ष्यामि येन दश्यं जगत्-द्वयं । नाग-यज्ञोपवीतां च चंद्राद्व
कृत-शेखरां । जटा-जूट-समासीनां^{१०} महाकाल-समीपगां^{११} । एवं काम-

ध्यानं, दृजादि सभी बाईस अक्षरवाले मन्त्र के समान ही है इनका पुरश्चरण भी एक लाख जप से होता है ।

आकर्षण में रक्त-पुष्प, स्तम्भन में पीत-पुष्प और मारण में
कृष्ण पुष्प द्वारा काली की पूजा करे ।

काली का षडक्षर मन्त्र इस प्रकार है—प्रणव, हृलेखा
रति-वीज, एवार-युक्त मकार, स्वाहा (छँ हीं ब्री मे रवाहा)
इसे भी 'काली-हृदय' बहते हैं । इसके ऋषि महाकाल भैरव, छन्दो
विशाट, देवता स्त्रियाली-ब्रह्मपुरुषवरी^{়়}, वीज ब्री, शिख
ही है । 'छँ हीं हृदयाय नमः' इत्यादित्रय से अङ्ग-न्यास करे ।

पाठभेद—१ अरथैककं तु वीजानां तथैवाते च चैककं; अद्यैक
तु वीजानां तथैवाते च एककं, २ मुलिहरता च एकशूलधरा, ३ कालामा-
सीना, ४ भवेत्; चरेत्, ५ लगता, ६ वीजं द्वयं चान्ते; वीज-
चान्ते; वीजं द्वयं चान्ते; वीजद्वयं चान्ते, वीजं द्वयं ठान्तं, ७ नियम-
द वश-कर्मणि, ८ मन्त्रः मन्त्रं, १० जटा-युक्तां च सम्बिन्द्य, ११ समीपत-

^{়়} यह दक्षिणाकाली का ही एक स्वरूप है ।

पाठभित्ता^१ विह्वला काम-मोहिता^२ । स्वं स्वं सन्त्रज्य^३ भत्तारं
वानि बीक-प्रयाङ्गना^४ ।

मध्य वशे महाविद्यां सिद्धि^५ -विद्यां महोदयां । भैरवेण पुरा प्रोक्ता
भाली-हृदय-संज्ञिता^६ । अस्या ज्ञान-प्रभावेण कलयामि जगत्रयं ।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य^७ हृलेखा-वीजमुद्धरेत् । रति-वीजं समुद्धृत्य^८
मन्त्रम-भगवित्यं । ठ-द्वयेन समायुक्ता विद्या-राज्ञी मयोदिता^९ । अनया
समुच्ची विद्या कालिकायास्तु दुर्लभा ।

पैरोद्दृश्य द्वृष्टिः प्रोक्तो विराट् छन्द उद्वीरितं^{११} । सिद्ध-काली
महा-वशा देवता भुवनेश्वरी । रति-वीजं वीजमस्या हृलेखा शक्तिरूच्यते ।
मृणालया यद्य-वीर्येन प्रणावाद्येन कल्पयेत् । अङ्ग-षट्कं ततो न-स्य ध्यात्वा
वीजी विद्या भवेत् ।

वालोन्द्रिन्नेन्दु बिम्ब-स्वदमृत-रसाप्लाविताङ्गी त्रिलेन्त्रा । सव्ये पाणो
सपापात् गलामृत^{१२} मथो मुक्तकेशी पिवन्ती । दिवस्त्रा बद्ध-काशी
मणि-मय-मुकुटाद्युर्तु दीप-जिह्वा । पायाश्नीलोत्पलाभा रवि शशि-विल-
सामुपर्वताङ्गीङ् पादा ।

जपेद् विशति-साहसः सहस्रैरेण संयुतं । होमयेत्तदशेन मृदु-पुष्पेण
मृदुनितु । चिकोणं कुण्डमालिस्य^{१३} सिद्धविद्यः शिवो भवेत् । पूजनं
मन्त्रोन्न च दक्षिणावदुपाचरेत् । एकाक्षर्या महाकल्प-समानं सर्वमेव वा ।

वीजी का स्वरूप इस प्रकार है—शवरूप महा-देव के ऊपर
महावित्ता, महादेव के हृदय पर बायां पैर और दोनों जङ्घाओं
पर दाया पैर । नील कमलवत् नील वरणा^{१४} । द्विसुजा—दायें हाथ
में शब्दग और बायें हाथ में पानपात्र कपाल । दायें हाथ में स्थित-

पाठभेद—१ काम-समा विद्या; काम-समाविद्वा, २ निलज्जा विवलवा:
निमग्न, ३ स्वयं राग्न्य, ४ आलिङ्गन्ति सदैव तं, ५ सिद्ध,-६ प्रोक्तं,
७ नियमिता, ८ निजिता, ९ मुकुच्चार्य, १० समुच्चार्य, ११ प्रकीर्तिता; महोदया,
१२ वशहत, १३ दसूज, १४ मासाद्य ।

रक्त पद्मस्य^१ होमेन साक्षाद् वैश्रवणो^२ भवेत् । विल्व-पत्रस्य होमेन
राज्यं भवति^३ निश्चितं । रक्त-प्रसून-होमेन वशयेदविलं जगत् । पीत-
पुष्पस्य होमेन स्तम्भयेद् वायु^४ मध्यथ । मालती-पुष्प-होमेन साक्षाद् वाक्-
पति-सन्निधः । कृष्ण पुष्पस्य होमेन शत्रून् मारयते अविरात् । अत्र सर्वस्य
हेमस्य^५ संख्या स्यादयुतावधि ।

अस्मा स्मरण-मात्रेण महा-पातक-कोट्यः । सद्यः प्रलयमायान्ति
साधक खेचरो भवेत् ।

॥ इति श्री काली-तन्त्रे सिद्ध-विद्या-विधिः नाम दशमः पटलः ॥

ऊर्ध्वं मुख खड़ग द्वारा उद्धिन्न चन्द्र-मण्डल से गिरती हुई अमृत-
धारा देवी के सारे शरीर को आप्लावित कर रही है । वायं हाथ
में स्थित कपाल से अमृत-पान करती हैं । त्रिनेत्रा, मुक्तकेश,
दिग्म्बरी और ललजिङ्गा हैं । कमर में नर-कर-समूह की काञ्ची
दोनों कानों में चन्द्र और सूर्य दो कुण्डल सुशोभित हैं ।
शोभमान हैं । मणिमय मुकुट आदि द्वारा देवी का शरीर

इस षडक्षर मन्त्र का पुरश्चरण इक्कीस सहस्र जप से होता
है । त्रिकोण कुण्ड में इसका दशांश अर्थात् इक्कीस सौ होम
करे । पूजा क्रम दक्षिणा काली के एकाक्षर मन्त्रवत् । इस मन्त्र से
रक्त पद्म द्वारा होम करने से साधक कुबेर के समान धनी होता
है । विल्वपत्र के होम से राज्य-लाभ, रक्त-पुष्प के होम से जगद्धशी-
करण, पीत-पुष्प के होम से स्तम्भन, मालती-पुष्प के होम से वृह-
स्पति-तुल्य विद्यालाभ और कृष्णपुष्प के होम से शत्रु का मारण
होता है । इन सभी होमां में संख्या दस हजार है । इस मन्त्र की
साधना से महापापों का नाश होकर साधक नभ-चर होता है ।

* * *

पाठमेद—१ पुष्पस्य, २ वैश्वानरो, ३ प्राप्नोति, ४ वृत्ति,

५ सर्वेषु होमेषु ।

रुक्मादश पटलः

सामान्य साधनं

मैरव उवाच—अथोच्यते कालिकायाः सामान्य-साधनं प्रिये । कृतेन
येन विधिवत् पालयते महापदः । शिवा-बलिश्च दातव्यः सर्व-सिद्धिमभी-
प्सुभिः ।

महोत्पाते महाघोरे महारोगे^१ महाग्रहे । महापदि महायुद्धे महाविग्रह-
संकुले^२ । महादारिद्र्य-शमने महा-दुःस्वप्न-दर्शने^३ । महाशांतौ महावश्ये^४ महा-
स्वस्त्ययने तथा । घोराभिचार-शमने^५ घोरोपद्रव-नाशने । कूट-युद्धादि-शमने^६
कूट-शत्रु-निवारणे^७ । राजादि-भय-शान्तौ च राज-कोष-प्रशान्तये^८ । न ददाति
बलि यस्तु शिवायै शिवतात्ये^९ । स पापिष्ठो नापिकारी कुल-देव्याः
समर्चने^{१०} ।

कुलीनं नावमन्येत कुलज्ञं^{११} परिपूजयेत् । कुलज्ञेषु प्रसन्नेषु^{१२} कालिका-
सन्निधि^{१३} भवेत् । अहो धन्यवतां^{१४} लोके जानाति^{१५} कुल-दर्शनं ।
तेषां मध्ये तु यः कश्चित्^{१६} कुल देवीं समर्चयेत् । कुलाचार-विहीनो
यः पूजयेत् कालिकां नरः । स सर्वा-मोक्ष-भागी च न स्यात् सर्यं न संशयः ।

पाठमेद—१ महारोगे महोत्पाते महादोषे; महारोगे महादोषे; महादोषे,
२ संकुल-सग्रहे; निग्रह-संकुले, ३ दुःख-प्रदर्शने, ४ बल्ये; बाल्ये, ५ घोर-
भिगमने घोरे, ६ युद्धाभिगमने, ७ निपातने, ८ राजोपद्रव-नाशने, ९ तृप्तये,
१० स पापिष्ठो न लज्जेत् कुल-देव्याः समर्चने; स पापिष्ठस्तु लज्जेत्
कुल-देव्याः प्रपूजने, ११ देवी-वत्, १२ कुलज्ञेषु, १३ सन्निधि, १४ भाग्यवतां;
धन्यतरा, १५ तथेति; जानन्ति, १६ ऽपि यः कोऽपि ।

फा० ४

आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पुष्टिं महद्-यशः । कवित्वं भुक्ति-मुक्ती च
कालिका-पाद-पूजनात् । शुक्लेन ध्यान-योगेन कविता^१ वश-वर्तिनी । पीतेन
ध्यान-योगेन स्तम्भये^२ दक्षिणं जगत् । कृष्णाभा शत्रु-मरणे धूम्राभाः^३ वैरि-
निग्रहे । अनया विद्यया मन्त्री शृणेत् पातकिनं यदि । स तु सप्तर्ष-मात्रेण
वक्ति सौधीमन्तर्गतां^४ । कुमारी-पूजनं कुर्यात् सर्व-धर्मं^५ फलाप्तये ।

भैरव उचाच—अथान्यत् संप्रवध्याभि प्रयोगं शत्रु-निग्रहं । सर्वान्ते
वह्नि-वनितां योजयित्वाऽग्निं जपेत् । कालिकां^६ द्विभुजां कर्तृ-कपाले सव्य-
दक्षिणे^७ । एवं ध्यात्वा तु शत्रूणां मारणं समुपाचरेत्^८ ।

एवं काली-मतं प्रोक्तं सर्व-सिद्धि-प्रदायकं^९ । अनया विद्यया सम्यक्
साधयेत् स्वप्रमाणितं । अनया विद्यया यद्-यन्न साधयति^{१०} साधकः । तत्त
सर्वेषु तन्त्रेषु नास्ति सत्यं न संशयः ।

काल-नियन्त्रणात् काली ज्ञान-तत्त्व-प्रदायिनी^{११} । तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन
यजेदुभय^{१२} सिद्धये । काली-मतमिदं दिव्यं भैरवेण प्रकाशितं । न कुत्रापि
प्रवक्तव्यं साधते च^{१३} स्वपौरुषं । एतत्तन्त्रं च मन्त्रं च व्यानं चैव प्रपूजनं ।

एकादश पटल का सारांश

काली को साधना से समस्त विपदायें दूर होती हैं । महोत्पात,
महाभय, दाहण ग्रह-दोष, महाविपत्ति, महायुद्ध, दारिद्र्य,
दुःखप्तन-दर्शन इत्यादि दोषों की शान्ति के लिये और वश्यकर्म,
स्वस्त्रयन, अभिचार-प्रशमन, उपद्रव-नाश, युद्ध-शान्ति,
शत्रु-निवारण, राज्य-भय-शान्ति तथा राज-कोप-शान्ति आदि के

पाठ-भेद—१ कालिका, २ वशये, ३ कृष्णेन शत्रुशमनं धूम्राभं; कृष्णाभां
शत्रुमरणे धूम्राभां, ४ वह्नि-सौधीं निराकुलं; मुक्ति-सौख्यमन्तर्गतं, ५ कर्म,
६ कपिलां, ७ दक्षिणां, ८ समुदाहृतं, ९ सिद्धिरनुष्ठितं; सिद्धे रुषितं,
१० धारयति, ११ प्रदर्शिनी, १२ दभय, १३ साधकेन ।

प्रकाशात् सिद्धि-हानिः स्यात् तस्माद् यत्नेन गोपयेत् । तस्मात्
सर्व-प्रयत्नेन गोपय्यं देवता-गर्णैः^१ । यथा मनुष्यो लभ्येत^२ तथा कार्यं
महेश्वरि । यो भक्तः साधयेद् ज्ञानी तस्मै नित्यं^३ प्रकाशयेत् ।
॥ श्री काली-तन्त्रे सामान्य-साधनं नाम एकादशः पटलः ॥

हेतु साधक को शिवा-बलि प्रदान करनी चाहिए । जो साधक
मङ्गल कामना से शिवावलि प्राप्त नहीं करता, उसे कौल मार्ग से
देवी-पूजा करने का अधिकार नहीं होता ।

कौल साधक की उपेक्षा न करे, अपितु उसकी पूजा करे ।
कौल के प्रसन्न होने से काली का सान्निध्य प्राप्त होता है । जो
कौल-मार्ग को जानकर तदनुसार देवी की अर्चना करता है, वह
धन्य है । कौल-मार्ग के अतिरिक्त विधि से काली की पूजा करने
से मोक्ष प्राप्त नहीं होता । काली-पूजा से आयु, आरोग्य, पैशवर्य,
बल, पुष्टि, यश, कवित्व, भोग और मोक्ष—ये सब मिलते हैं ।

कवित्व-शक्ति पाने के लिये देवी को शुक्ल-वर्णा, स्तम्भन में
पीत-वर्णा, मारण में कृष्ण-वर्णा और शत्रु-निग्रह में धूम्र-वर्णा ध्यान
करे । सब धर्मों का फल पाने के लिये कुमारी-पूजा करे ।

काल का नियन्त्रण करने से 'काली' नाम से जगदम्बा
विख्यात हुई हैं । ये ज्ञान-तत्त्व-दायिनी हैं । भोग और मोक्ष उभय
कामना-सिद्धि के लिए इनकी आराधना करे ।

पाठ-भेद—१ हि त्वया प्रिये, २ मर्त्यो न लभते; ह्यन्यो न लभते,
३ साधको मन्त्री तस्मै सत्यं; साधको ज्ञानी तस्मै ज्ञानं; साधको ज्ञानी
तस्मै नित्यं ।

द्वादशः पटलः

परम गुह्याचारः

भैरव उवाच—त्वयोक्तं पूजनं देव साधनेन पुरस्कृतं । इदानीं श्रोतु-
मिच्छामि वीर-नित्य-क्रियां प्रभो ।

भैरव उवाच—प्रातःकृत्यं ततो न्यास ऋष्याद्भास्तुंगुलैरपि । वर्ण-व्यापक-
विन्यासः पीठ-न्यासस्ततः परं । ततोऽन्तर्यजनं देवि योगि-योगानिशा प्रिये ।
पञ्चमानां ग्राशनं च जपो रात्रौ विधानतः । स्तोत्र-पाठो यत्र तत्र समये च
वरानने । वीर-थद्वा तर्पणं च तथालापः स्त्रियामपि । विजगाङ्गीकृतिश्चैव
स्व-सुखोद्देशिनं तथा । अप्रकाशः कुलाचारे मृदु-भाषा च सर्वतः । गुरुनुजा-
मात्रेणैव सर्वचार-विधिः प्रिये ।

एवमादीनि चान्यानि वीर-निन्दा न सुवृते । ऐति परम्परया ह्येन च
रुद्रा देवि तच्चीने प्रतिष्ठितं । अन्यत्र विषयेन्नास्ति सत्यमेतद् ब्रवेभि ते ।
वामाचारः कुलाचारश्चीन-नाथेन शङ्करात् । प्रकाशितः शङ्करेण महारुद्रात्
प्रकाशितः । महाचीनाधिषो देवो माहात्म्येन तयोर्द्वयोः । कुलाचारं कुल-श्रेष्ठे
वामाचारः प्रयत्नतः । अस्यैवाशेष-माहात्म्यं चीन-तन्त्रे मयोदितं । कुलाचार-
मशेषेण चीन-नाथेन वेत्त्यपि ।

यद् यद् दृष्टं श्रुतं यद् यद् गुरुः साधक-वक्त्रतः । ततत् कायं वीरवर्यै-
स्तेन सिद्धुर्भवेत् प्रिये । ववचिच्छरणः ववचिद्भूतपिशाच-वत् ।
ववचिद्देवार्चन-रतः ववचित्तविन्दकस्तथा । भवेच्छील-रतो वीरो महारुद्रस्य
शासनात् ।

29025

भक्षणं च विधि वक्ष्ये पञ्चमादेयथा विधि । आदौ गुरुं स्मरत् पश्चात्
कुरुद्गलीं परिभाव्य च । आजिहान्तस्तर्पणेन भक्षयेन्नति-पूर्वकं । गुरुं नत्वा
तपोज्येष्ठं शक्ते नैति-परायणः । ज्येष्ठत्वं वा कनिष्ठत्वं कुलाचार-विधानतः ।
अभिषेक्ता गुरुः साक्षान्मन्त्रदेन समः स्मृतः । अभिषेके विना भूते प्रधानत्वं
करोति यः । चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुर्विद्या यशो बलं । तद्विधिश्चोत्तरा-
तन्त्रे पाशवेन विमिश्नि । वोरैर्ग्राह्यः प्रयत्नेन हंसैः क्षीरं जलाद यथा ।
आचारोऽप्यं शक्ति-मन्त्रे सर्वत्र परिकथयते ।

विशेषात् कालिका तारा भैरव्यादिषु पञ्चसु । कालिका-तारिणी-भेदं
यः करोति स नारकी । यत्र यत्र कालिकेति नाम संश्लृते प्रिये । तत्र तारा
विधानं च युते नाम संशयः । यद् यदन्यत् साधनं च नान्यत्रापि नोदितं ।
तत् सर्वं पूर्व-पूर्वेण तन्त्रेण ज्ञायते प्रिये । न पूजा न्यास-जालं वा स्त्रीणां
केवल-जापत् सिद्धुर्भवति देवेशि कुलाचार-विधानतः ।

द्वादश पटल का सारांश

वीर साधक को प्रतिदिन प्रातःकृत्य करने के बाद ऋष्यादि-
न्यास, अङ्गन्यास, वर्ण-व्यापक-पीठन्यास कर अन्तर्यजन करना
चाहिये । रात्रि में पञ्चमकार-युक्त जप-साधना करनी चाहिये ।
स्तोत्र-पाठ जब समय मिले, तभी करना चाहिये । वीरों के प्रति
थ्रद्वा रखनी चाहिये । तर्पण, स्त्रियों के साथ बातचीत और
विजया-ग्रहण में रुचि होनी चाहिये ।

कुलाचार में गोपनीयता का भाव रखें, मृदु भाषा सदा बोलें
और सदा गुरु की आज्ञा का पालन करें । वीरों की कभी निन्दा
न करें । वामाचार और कुलाचार का माहात्म्य असीम है ।
प्रयत्नपूर्वक उसी में तत्पर रहना चाहिये ।

अथ चेत् क्रियते न्यासस्तदा शृणु विविं प्रिये । ऋष्याद्यङ्गक-पीठानां
न्यासं कृत्वा च संस्मरेत् । ततः साहविति ध्यायेत् महाचीन-मतं यथा ।
काली-तन्त्रं कौल-तन्त्रं तारा-तन्त्रं तथा प्रिये । चीन-तन्त्रं स्वतन्त्रं च
युगपद्वक्त्रतः स्मृतं । अथ यद्यन्मतं प्रोक्तं तत्पञ्चमु समाचरेत् । गुरु-पाद-
प्रसादेन शुभादृष्टस्य योगतः । आचारः प्राप्यते वीरैर्नन्त्रि कार्यश्च संशय ।
तदैव तुष्टा देवी निर्विकल्पः स्वयं यदि ।

॥ इति श्री काली-तन्त्रे परम-गुह्याचारः नाम द्वादशः पटलः ॥

पहले गुरु का स्मरण करे । फिर कुण्डलिनी का ध्यान करे
कि वह जिहा के अधभाग में आकर विराजमान है । तब उसे
नमस्कार करते हुये गुरुदेव और ज्येष्ठ साधकों तथा शक्ति को
प्रणामपूर्वक तर्पण-चर्चण करे ।

अभिषिक्त वीर को मन्त्र-दाता गुरु के समान समझे ।
अभिषेक हुये बिना जो प्रधानता स्वीकार करता है, उसे आयु-
विद्यान्यश और बल इन चारों की हानि सहनी पड़ता है ।

सभी शक्ति-मन्त्रों के सम्बन्ध में इसी प्रकार आचार विहित
है । कालिका, तारा, भैरवी आदि की उपासना में इसका विशेष
महत्व है । काली और तारा में भैद माननेवाला नरक का भागी
होता है ॥५॥

॥५॥ यह पटल 'काली-तन्त्र' की एक दुर्लभ प्रतिलिपि में दृष्टिगत हुआ
है । अन्य प्रतिलिपियों में एकादश पटल में ही इस 'काली-तन्त्र' की
समाप्ति मिलती है । इसी कारण इसके सम्बन्ध में पाठान्तरों का अभाव
है । बँगला संस्करण में इसका अर्थ भी नहीं प्रकाशित किया गया ।

यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि बँगला संस्करण काली-तन्त्र

साधिका स्त्री को पूजा, न्यास-जालादि करने की आवश्यकता
नहीं । वह कुलाचार-विधि से केवल जप मात्र द्वारा सिद्धि प्राप्त
कर सकती है । यदि वह न्यासादि करना चाहती है, तो उसकी विधि
यह है कि ऋष्यादि, अङ्ग, पीठन्यास करके ध्यान करे । तब 'वह
मैं ही हूँ' (साऽहम्) अर्थात् 'मैं जगद्भ्वा-स्वरूप हूँ' ऐसी भावना
करे । निर्विकल्प होने पर ही देवी को कृपा प्राप्त होती है ।

की निम्न हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर प्रकाशित किया
गया था—

१ धानुका-निवासी श्री पार्वतीचरण शास्त्री द्वारा प्रदत्त तीन
पाण्डुलिपियाँ

२ संस्कृत साहित्य परिषद्, कलकत्ता की आपनी एक पाण्डुलिपि
इन चार पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त यदि किसी महानुभाव के पात
'काली-तन्त्र' की हस्तलिखित कोई प्रति हो, तो वे कृपया उसे हमें भेजने
का कष्ट करेंगे । इससे अगले संस्करण में हम उसका भी उल्लेख कर
सकेंगे । —सं०





COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

{creator of
hinduism
server}



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

{creator of
hinduism
server}

294.551

S 562 K

पार्यशिष्ट

'क्री'-वीजे शशि-शेखरे धन-कुचि श्यामे त्रिनेत्रे शिवे ।

खडग-च्छन्न - शिरो-वराभय-करे भो मुण्ड-माल-प्रिये ॥

प्रत्यालीढ-पदे शवोपरि महाकालेन साढ़े रते ।

आत्मायस्व दिगम्बरि स्मित-मुखि श्रीदक्षिण-कालिके ॥

भगवती दक्षिण-कालिका का उक्त ध्यान पूज्य स्वामी सदाशिव
तीर्थ के हस्ताक्षरों में उनसे प्राप्त 'काली-तन्त्र' की प्रति के प्रारम्भ में
अद्वित है। इस ध्यान के द्वारा श्री जगदम्बा के दिव्य स्वरूप को
हृदयज्ञम् करने में साधकों को सहायता मिलती है। इसी प्रकार
'तन्त्रसार' में भगवती के मन्त्र की जो व्याख्या दी गई है, उससे
मन्त्रार्थ को समझना सरल हो जाता है। व्याख्या इस प्रकार है—

'क्री'-कारो मस्तकं देवि 'क्री'-कारश्च ललाटकम् ।

नेत्र-त्रयश्च 'क्री'-कारो 'हूँ'- कारेण च नासिका ॥

'हूँ'-कारो मुख- पद्मं स्यात् 'ही'-कारः कर्ण-युग्मकम् ।

'ही'-कारेण भवेद् ग्रीवा 'द'-कारश्चिबुकं भवेत् ॥

'क्षि'-कारेण भवेद् दन्तो 'ण'-कारेनोष्ठ-युग्मकम् ।

'का'-कारेण स्तन-द्वन्द्वं 'लि'-कारः पृष्ठ-देशकः ॥

'के'-कारेण भवेद् बाहुः 'क्री'-कारेणोदरं भवेत् ।

'क्री'-कारो नाभि-देशः स्यात् 'क्री'-कारश्च नितम्बकः ॥

'हूँ'-कारो योनि-रूपः स्यात् 'हूँ'-कारेणोरु-युग्मकम् ।

'ही'-कारो जानु-युग्मं स्यात् 'ही'-कारो गुल्फ-देशकः ॥

'स्वा'-शब्देन पद-द्वन्द्वं 'हा'-शब्दैर्नेत्रवरं तथा ।

29025